भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू

वार्षिक ई - पत्रिका “सृजन”

2025-2026

उच्च शिक्षित युवा - सुनहरे भविष्य का आधार

भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
डॉ. अंबेडकर नगर (महू) जिला इंदौर (म.प्र.)

सृजन

2025-2026

डॉ. वंदना चराटे- संपादक

डॉ. सुनीता वहल - सह संपादक

डॉ. आरती बरोठिया- सदस्य

डॉ. नीलू तिवारी- सदस्य

डॉ. ममता वर्मा- सदस्य

प्रो. दीपिका भारद्वाज- सदस्य

श्री अमर चौहान- सदस्य

प्रो. विंध्या विश्वकर्मा- सदस्य

प्रो. पूजा वर्मा- सदस्य

हमारे प्रेरणा स्रोत ब्रह्मलीन श्री भेरुलाल जी पाटीदार

सुश्री उषा ठाकुर

शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि भेरूलाल पाटीदार शास. महाविद्यालय महू द्वारा वार्षिक ई-पत्रिका 'सृजन' का प्रकाशन किया जा रहा है। साहित्यिक अभिरुचि को जागृत करने और संवेदनाओं को शब्द प्रदान करने में पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह ई-पत्रिका पर्यावरण संरक्षण में किया गया नवाचार है। यह प्रयास निरंतर जारी रहे…

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

सुश्री उषा ठाकुर
स्थानीय विधायक

एड. नीलेश पाटीदार

शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय द्वारा वार्षिक ई-पत्रिका सृजन का प्रकाशन किया जा रहा है। विद्यार्थियों की बौद्धिक प्रतिभा को जागृत करने के साथ-साथ तकनीकी युग में समय के साथ किया गया, यह प्रशंसनीय प्रयास है। पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास के लिए

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

एड. नीलेश पाटीदार
जन भागीदारी अध्यक्ष

डॉ. आर. सी. दीक्षित

शुभकामना संदेश

वार्षिक ई-पत्रिका 'सृजन' के प्रकाशन अवसर पर महाविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई। आपकी पत्रिका तकनीकी समायोजन के साथ-साथ महाविद्यालय के शैक्षणिक वातावरण को और भी समृद्ध बनाएगी। विद्यार्थियों को नए विचारों और रचनाओं के लिए प्रेरित करेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

डॉ. आर. सी. दीक्षित

अतिरिक्त संचालक इंदौर संभाग

डॉ. प्रवीण ओझा

शुभकामना संदेश

वार्षिक ई-पत्रिका 'सृजन' के प्रकाशन के अवसर पर महाविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई। विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारने और भावनाओं को शब्द प्रदान करने में पत्रिकाओं का अमूल्य योगदान है। यह विद्यार्थी जीवन की महत्वपूर्ण धरोहर है, इस धरोहर को बनाए रखने का प्रयास निरंतर फलीभूत हो।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

डॉ. प्रवीण ओझा

प्राचार्य

डॉ. वन्दना चराटे

शुभकामना संदेश

वर्तमान युग तकनीकी क्रांति का युग है, तकनीक ने मानव जीवन में इस तरह घुसपैठ कर ली है कि वह जीवन की आवश्यकता नहीं अब अनिवार्यता बनता जा रहा है, लेकिन इसका एक दूसरा पक्ष यह भी है कि यह तकनीकी सामर्थ्य जीवन के विकास को गति तो दे सकता है लेकिन इससे ठहराव की कल्पना व्यर्थ है, इस तकनीकी आधार में संवेदनाएं खत्म होती जा रही है व्यक्ति, समाज, परिवार, परिवेश सभी का स्वरूप धीरे-धीरे बदलता जा रहा है वर्तमान में संवेदनाएं कृत्रिम बुद्धिमत्ता से संचालित हो रही है जो धीरे-धीरे भावना न होकर सूचना का पर्याय बनती जा रही है इस दौर में साहित्यिक अभिरुचियों का संवेदनाओं को जागृत करने में महत्वपूर्ण स्थान है अध्ययन, अध्यापन, कला और लेखन जैसे कार्य उसे नई दिशा प्रदान करते हैं, यह भावनाओं को शब्दों की गहराई और सार्थकता से जोड़ सकते हैं, शिक्षा का मूल उद्देश्य भी एक बेहतर इंसान बनना है| इस पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थी जीवन की भाव दशाऔर संवेदनाओं को एक नई दिशा देने का छोटा सा लेकिन स्थायी प्रयास किया है|

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

डॉ वन्दना चराटे
विभागाध्यक्ष हिंदी

अनुक्रमाणिक

क्रमांक	रचना	पेज नंबर
1	देवीअहिल्याबाई होलकर -संगीता पाटीदार	1-3
2	महिला सशक्तिकरण - शुभम	4-6
3	सर्वपल्ली राधाकृष्णन - मोनिका गोडाले	7
4	नदियों का महत्व - मनीषा ओसारी	8
5	बचपन का सपना - हर्ष पटेल	9
6	अंगवर्ती मुहावरे - कल्पना औसारी	10-11
7	प्राणीपरक लोकोक्तियां - सतीश निनामा	12
8	सपनों की रोशनी - दीपक शर्मा	13-14
9	नारी है वह नारी है -विंध्या विश्वकर्मा	14
10	मानवाधिकार और भारतीय महिलाओं की बदलती स्थिति - डॉ प्रमिला यादव	15-16
11	मानवीय मूल्य मनुष्य के चरित्र और संस्कार का निर्माण करते हैं - डॉ अभिलाषा ठाकुर	17-18
12	मूल्य आधारित शिक्षा . समय की आवश्यकता - डॉ सुनीता साकले	19-20
13	रोचक जानकारी - डॉ नंदा भाटिया	20-21
14	प्रकृति के पुकार चिपको आंदोलन और जनशक्ति का उदाहरण - डॉ रंजना वर्मा	22-25
15	कबीर के दोहे - दर्शना परमार	26
16	महिला सशक्तिकरण - स्नेहा शुक्ला	27
17	मेरा पहला मोबाइल - निधि चौधरी	28
18	ऑनलाइन कक्षाऐं - विश्वजीत सिंह	29
19	शूरवीर तू - कमलराज राजोरिया	30
20	मानव की कैद में धरती - डॉ मनीषा दण्डवते	31
21	नारी शक्ति - डॉ ममता वर्मा	32
22	पर्यावरण बचाएं - डॉ रेखा नागर	33
23	Redefining Empowerment: with special Reference to Dr Sudha Murty. - Dr Sunita wahal	34-35
24	How failure shaped success - Lakshya yadav	36
25	Youth perspectives on Environmental challenges. - Deepika Bhardwaj	37-38
26	woman and computers : Empowering the Digital Generation. - Harshita chauhan.	39

देवी अहिल्याबाई होल्कर : सुशासन, धर्मनिष्ठा और लोककल्याण पर आधारित राज्य-व्यवस्था का आदर्श

भारतीय इतिहास में अहिल्याबाई होल्कर का नाम एक ऐसी शासिका के रूप में आदरपूर्वक लिया जाता है, जिन्होंने अठारहवीं शताब्दी के राजनीतिक अस्थिरता के दौर में सुशासन, नैतिक नेतृत्व और लोककल्याण पर आधारित राज्य की स्थापना की। वे केवल मालवा की महारानी नहीं थीं बल्कि भारतीय प्रशासनिक परंपरा में आदर्श राजधर्म की जीवंत मिसाल थीं। अहिल्याबाई का शासन उस समय प्रारंभ हुआ, जब भारत में मुगल सत्ता का पतन हो रहा था और क्षेत्रीय शक्तियाँ उभर रही थीं। मराठा संघ एक प्रभावशाली राजनीतिक शक्ति बन चुका था, परंतु आंतरिक संघर्षों और बाहरी चुनौतियों से जूझ रहा था। ऐसे समय में एक महिला का राज्य की बागडोर संभालना अपने आप में असाधारण घटना थी।

ऐतिहासिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि:

अठारहवीं शताब्दी का भारत राजनीतिक संक्रमण का काल था। औरंगज़ेब की मृत्यु (1707) के बाद मुगल साम्राज्य की केंद्रीय सत्ता कमजोर पड़ गई। परिणामस्वरूप विभिन्न प्रांतीय शक्तियाँ जैसे:- मराठा, सिक्ख, जाट और नवाब अपने-अपने क्षेत्रों में सशक्त होने लगीं। मराठा शक्ति के विस्तार में होल्कर वंश का महत्वपूर्ण योगदान था। मल्हारराव होल्कर मराठा संघ के प्रमुख सेनानायक थे। अहिल्याबाई का विवाह उनके पुत्र खांडेराव होल्कर से हुआ। किंतु सन् 1754 में खंडेराव की मृत्यु और तत्पश्चात् मल्हारराव के निधन के बाद राज्य में उत्तराधिकार का संकट उत्पन्न हो गया। ऐसी स्थिति में 1767 में अहिल्याबाई ने मालवा राज्य की सत्ता संभाली। यह निर्णय केवल पारिवारिक नहीं, बल्कि राजनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण था, क्योंकि मराठा संघ को एक सक्षम और स्थिर नेतृत्व की आवश्यकता थी।

शासन शैली और प्रशासनिक दृष्टिकोण:

अहिल्याबाई होल्कर का शासन लोककल्याण और न्याय पर आधारित था। उन्होंने राजधानी को महेश्वर स्थानांतरित किया, जो नर्मदा तट पर स्थित एक सांस्कृतिक और व्यापारिक केंद्र था। उनकी प्रशासनिक नीति के मुख्य तत्व थे:

1.न्यायप्रियता – वे प्रतिदिन दरबार लगाकर प्रजा की शिकायतें स्वयं सुनती थीं। न्याय प्रणाली सरल और सुलभ थी।

2.**राजकोषीय संतुलन – उन्होंने कर प्रणाली को संतुलित रखा और किसानों पर अत्यधिक करारोपण से बचाया।**

3.**सुरक्षा और शांति – आंतरिक शांति बनाए रखने के लिए प्रभावी सैन्य संगठन किया, परंतु अनावश्यक युद्धों से बचीं।**

4.**धार्मिक सहिष्णुता – उन्होंने विभिन्न धर्मों और समुदायों के प्रति समान सम्मान की नीति अपनाई।**

उनका शासन यह दर्शाता है कि राजनीतिक स्थिरता केवल सैन्य शक्ति से नहीं, बल्कि न्यायपूर्ण प्रशासन और जनता के विश्वास से प्राप्त होती है।

धार्मिक और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण:

अहिल्याबाई ने भारत के अनेक तीर्थस्थलों के पुनर्निर्माण में योगदान दिया। वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण, सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार और अनेक घाटों, मंदिरों तथा धर्मशालाओं का निर्माण उनके संरक्षण में हुआ। यह कार्य केवल धार्मिक आस्था का परिणाम नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण का भी प्रतीक था। मुगल काल और आक्रमणों के कारण क्षतिग्रस्त धार्मिक स्थलों का पुनर्निर्माण राष्ट्रीय अस्मिता को सुदृढ़ करने का माध्यम बना।

आर्थिक और सामाजिक नीतियाँ:

अहिल्याबाई ने व्यापार और कृषि को प्रोत्साहित किया। महेश्वर वस्त्र उद्योग (महेश्वरी साड़ी) का विकास उनके संरक्षण में हुआ, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बल मिला। उन्होंने सड़कों, कुओं, बावड़ियों और धर्मशालाओं का निर्माण कराया, जिससे आम जनता को सुविधा मिली। उनका शासन "कल्याणकारी राज्य" (Welfare State) **की अवधारणा का प्रारंभिक उदाहरण माना जा सकता है, जहाँ राज्य का उद्देश्य केवल राजस्व संग्रह नहीं बल्कि जनता का सर्वांगीण विकास था।**

राजनीतिक विश्लेषण:

राजनीतिक दृष्टि से अहिल्याबाई का शासन पितृसत्तात्मक समाज में महिला नेतृत्व की सशक्त मिसाल है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि प्रशासनिक क्षमता लिंग पर निर्भर नहीं करती। उनकी नीतियाँ, शक्ति और नैतिकता के संतुलन पर आधारित थीं। वे कठोर निर्णय लेने में सक्षम थीं, परंतु उनमें करुणा और संवेदनशीलता भी थी। आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत के अनुसार, उनका शासन "नैतिक नेतृत्व" (Moral Leadership) **और "उत्तरदायी शासन"** (Responsive Governance) **का उदाहरण प्रस्तुत करता है।**

मराठा राजनीति में योगदान:

मराठा संघ उस समय आंतरिक प्रतिस्पर्धा और बाहरी दबावों से जूझ रहा था। अहिल्याबाई ने कूटनीति और संतुलन की नीति अपनाई। उन्होंने पेशवा और अन्य मराठा सरदारों के साथ सामंजस्य बनाए रखा, जिससे साम्राज्यीय क्षेत्र में स्थिरता बनी रही। उनका शासन सैन्य विस्तार की अपेक्षा आंतरिक सुदृढ़ीकरण पर केंद्रित था। यह नीति उस समय की राजनीतिक परिस्थितियों में अत्यंत व्यावहारिक सिद्ध हुई।

निष्कर्ष:

देवी अहिल्याबाई होल्कर भारतीय इतिहास की ऐसी महान शासिका थीं, जिन्होंने अराजकता और अस्थिरता के दौर में न्याय, धर्मनिष्ठा और लोककल्याण पर आधारित शासन की स्थापना की। उनका प्रशासनिक कौशल, धार्मिक सहिष्णुता, आर्थिक दूरदर्शिता और नैतिक नेतृत्व उन्हें भारतीय राजनीतिक परंपरा में विशिष्ट स्थान प्रदान करता है। वे केवल एक धार्मिक प्रवृत्ति की रानी नहीं थीं, बल्कि एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ और कुशल प्रशासक थीं। आज भी उनका शासन "सुशासन" (Good Governance) का आदर्श माना जाता है। अतः देवी अहिल्याबाई होल्कर का जीवन यह सिद्ध करता है कि सच्चा नेतृत्व शक्ति के प्रदर्शन में नहीं, बल्कि जनता के कल्याण और न्यायपूर्ण व्यवस्था की स्थापना में निहित होता है।

संगीता पाटीदार
एम. ए . प्रथम सेमेस्टर

- "सच है, विपत्ति जब आती है,
  कायर को ही दहलाती है,
  शूरमा नहीं विचलित होते,
  क्षण एक नहीं धीरज खोते,
  विघ्नों को गले लगाते हैं,
  काँटों में राह बनाते हैं"

: रामधारी सिंह दिनकर

<u>महिला सशक्तिकरण</u>

महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं को शक्तिशाली बना कर उन्हें स्वयं निर्णय लेने में सक्षम बनाना है। वर्षों से पुरुषों के हाथों महिलाओं को बहुत कष्ट सहना पड़ा है। पिछली शताब्दी में उन्हें लगभग, अस्तित्व हीन माना जाता था। मानो सभी अधिकार पुरुषों के हो। यहां तक की मतदान जैसी बुनियादी चीज भी जैसे-जैसे स्वयं विकसित हुई, महिला अपनी शक्ति का एहसास करने लगी। यहीं से महिला सशक्तिकरण की क्रांति शुरू हुई, चूंकि महिलाओं को उनके लिए निर्णय लेने की अनुमति नहीं थी। महिला सशक्तिकरण ताजी हवा के झोंके की तरह आया। इसने उन्हें अपने अधिकारों के बारे में जागरूक किया और बताया कि कैसे उन्हें किसी पुरुष पर आश्रित रहने की अपेक्षा समाज में अपनी जगह बनानी चाहिए ।उन्होंने इस तथ्य को स्वीकार किया कि चीजें केवल किसी के लिंग के कारण उसके पक्ष में काम नहीं कर सकती। हालांकि जब हम उन कारणों के बारे में बात करते हैं, कि हमें इसकी आवश्यकता क्यों है? तो हमें अभी एक लंबा रास्ता तय करना है।

<u>महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता:</u>

लगभग हर देश चाहे वह कितना भी प्रगतिशील क्यों ना हो, महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार का इतिहास रखता है। दसूरे शब्दों में, दुनिया भर की महिलाएं आज भी अपनी स्थिति तक पहुंचाने के लिए विद्रोह कर रही हैं, जबकि पश्चिमी देश अभी भी प्रगति कर रहा है। भारत जैसी तीसरी दुनिया के देश अभी भी महिला सशक्तिकरण के पीछे है। भारत में महिला सशक्तिकरण की पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है। भारत उन देशों में से है जो महिलाओं के लिए सुरक्षित नहीं है। इसके कई कारण हैं। सबसे पहले, भारत में महिलाओं को ऑनर किलिंग का खतरा रहता है। यदि वह उनकी विरासत की प्रतिष्ठा को शर्मसार करते हैं, तो उनका परिवार उनकी जान लेना ही सही समझता है।

इसके अलावा यहां शिक्षा स्वतंत्रता का परिदृश्य बहुत प्रतिगामी है। महिलाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति नहीं है, उनकी शादी जल्दी करवा दी जाती है। कुछ क्षेत्रों में पुरुष अभी भी महिलाओं पर हावी हो रहे हैं, जैसे कि उनके लिए लगातार काम करना। वे उन्हें न तो बाहर जाने देते हैं और न ही किसी तरह की आजादी देते हैं। इसके अलावा, भारत में घरेलू हिंसा एक बड़ी समस्या है। पुरुष अपनी पत्नी को पीटते हैं और उनके साथ दुर्व्यवहार करते हैं क्योंकि वह सोचते हैं कि महिलाएं उनकी संपत्ति है। इसी तरह जो महिलाएं वास्तव में काम करती हैं, उन्हें उसी काम के लिए पुरुष की तुलना कम वेतन मिलता है। किसी को उसके लिंग के आधार पर समान काम के लिए कम भुगतान करना सर्वथा अनुचित और लैंगिक भेदभाव है। इस प्रकार हम देखते हैं कि महिला सशक्तिकरण किस

प्रकार समय की मांग है। हमें इन महिलाओं को अपने लिए बोलने और कभी भी अन्य का शिकार न होने के लिए सशक्त बनाने की आवश्यकता है।

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए कई तरीके हैं। इसे संभव बनाने के लिए व्यक्तियों और सरकार दोनों को एक साथ आना होगा। महिलाएं अशिक्षित न होकर अपने बलबूते पर जीवन जी सकें, लिंग की परवाह किए बिना महिलाओं को हर क्षेत्र में समान अवसर दिये जाने चाहिए। इसके अलावा उन्हें समान वेतन भी दिया जाना चाहिए। बाल-विवाह को समाप्त कर हम महिलाओं को सशक्त बना सकते हैं। हमें विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए, जहां उन्हें वित्तीय संकट का सामना करने की स्थिति में खुद की रक्षा करने का कौशल सिखाया जा सके। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि तलाक और दुर्व्यवहार की शर्म को खिड़की से बाहर फेंक देना चाहिए। कई महिलाएं समाज के डर के कारण अपमानजनक रिश्तों में रहती हैं। माता-पिता को अपनी बेटियों को यह सिखाना चाहिए कि तलाक के बाद ताबूत में दफनाने की बजाय तलाकशुदा का घर आना ठीक है।

<u>महिला सशक्तिकरण के मार्ग में आनेवाली बाधाएं</u>:

आज के समय में महिला सशक्तिकरण एक चर्चा का विषय है। खासतौर से पिछड़े और प्रगतिशील देशो में क्योंकि उन्हें इस बात का काफी बाद में ज्ञान हुआ कि बिना महिलाओं के देश की तरक्की संभव नहीं है। महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का अर्थ उनके आर्थिक फैसले आय, संपत्ति और दूसरी वस्तुओं की आवश्यकता और उपलब्धताओं से है। इन सुविधाओं को पाकर ही वह अपने सामाजिक स्तर को ऊपर कर सकती हैं।

<u>सामाजिक मापदंड:</u>

पुरानी विचारधाराओं के कारण भारत के कई क्षेत्रों में महिलाओं को ससुराल छोड़ने के अनुमति नहीं होती है। जो महिला सशक्तिकरण में बाधा के रूप में कार्य करती हैं।

<u>कार्य क्षेत्र में सामाजिक शोषण:</u>

कार्य क्षेत्र में होने वाला शोषण भी महिला सशक्तिकरण में एक बड़ी बाधा है। यह समाज में पुरुष प्रधानता के वर्चस्व के कारण महिलाओं के लिए भी समस्याएं उत्पन्न करता है।

<u>लैंगिक भेदभाव:</u>

भारत में अभी भी कार्य स्थलों पर महिलाओं के साथ लैंगिक स्तर पर काफी भेदभाव किया जाता है। कई सारे क्षेत्र में तो महिलाओं को शिक्षा और रोजगार के लिए बाहर जाने की इजाजत और

अपने फैसले खुद लेने की भी आजादी नहीं होती है। लड़के और लड़की में भेदभाव किया जाता है। इन्हीं कारणों से महिला सशक्त नहीं बन पाती।

<u>अशिक्षा</u>:

भारत में महिलाओं में अशिक्षा एक बड़ी समस्या है। आजकल शहरी लड़कियां शिक्षा के मामले में बराबर हैं किंतु पिछड़े वर्ग और ग्रामीण क्षेत्र अभी भी इसी मनोव्यथा से पीड़ित है कि लड़कियां शिक्षित होनी चाहिए। जब हमारे देश की लड़कियां भी पढ़ेंगीं, तभी हमारा देश प्रगति के पथ पर आगे बढ़ेगा।

"पढ़ेगा इंडिया तभी तो आगे बढ़ेगा इंडिया"

<u>निष्कर्ष</u>:

जिस तरह से भारत को सबसे तेज आर्थिक तरक्की प्राप्त हुई है। उसे देखते हुए निकट भविष्य में भारत को महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने पर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। हमें महिला सशक्तिकरण के इस कार्य को समझने की आवश्यकता है क्योंकि इसी के द्वारा ही देश में लैंगिक समानता और आर्थिक तरक्की को प्राप्त किया जा सकता है ।

नाम- शुभम
कक्षा- बीएससी सेकंड ईयर मैथ्स

- **"क्या कहती हो ठहरो नारी!**
संकल्प अश्रु-जल-से-अपने।
तुम दान कर चुकी पहले ही
जीवन के सोने-से सपने।

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास-रजत-नग पगतल में।
पीयूष-स्रोत-सी बहा करो
जीवन के सुंदर समतल में।"

: जयशंकर प्रसाद

डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन

5 सितंबर 1888 ई. को भारत के तमिलनाडु प्रांत में जन्में डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारत के महान शिक्षकों में से एक हैं। डॉ. राधाकृष्णन की जन्मतिथि के दिन 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन के पास उनके कुछ छात्र आये और उनसे उनके जन्म दिवस को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की मांग की। डॉ. राधाकृष्णन की मंजूरी के बाद 5 सितंबर सन् 1962 से हर साल शिक्षक दिवस मनाया जाता है। वह भारत के पहले उपराष्ट्रपति और दूसरे राष्ट्रपति थे। शिक्षा के क्षेत्र में और एक राजनेता के रूप में उनका योगदान अविस्मरणीय है। जब उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की तो उनके पिता चाहते थे कि वह आगे की पढ़ाई के बदले एक मंदिर में पुजारी बनें लेकिन उन्होंने मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज से छात्रवृत्ति जीतने के लिए कड़ी मेहनत की और अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी कर वर्ष 1906 में प्रथम श्रेणी के साथ बी० ए० पास किया। वह सन् 1952 में भारत के उपराष्ट्रपति बने और 1962 में भारत के राष्ट्रपति के रूप में उन्हें चुना गया। उनका नाम लगातार 5 वर्षों तक साहित्य के नोबेल पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया था लेकिन उन्हें कभी नोबेल पुरस्कार नहीं मिला। उन्होंने सन् 1954 में भारत रत्न सहित कई अन्य प्रतिष्ठित पुरस्कार और खिताब जीते। डॉ. राधाकृष्णन का 16 अप्रैल 1975 को चेन्नई में निधन हो गया। इस प्रकार डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कठिन समय में सफलतापूर्वक भारत का नेतृत्व किया।

मोनिका गोडाले
बी.ए. द्वितीय वर्ष

- **भगवान की पूजा नहीं होती बल्कि उन लोगों की पूजा होती है जो उनके नाम पर बोलने का दावा करते हैं।**
- **अगर हम दुनिया के इतिहास को देखे, तो पाएंगे कि सभ्यता का निर्माण उन महान ऋषियों और वैज्ञानिकों के हाथों से हुआ है,जो स्वयं विचार करने की सामर्थ्य रखते हैं,जो देश और काल की गहराइयों में प्रवेश करते हैं,उनके रहस्यों का पता लगाते हैं और इस तरह से प्राप्त ज्ञान का उपयोग विश्व श्रेय या लोक-कल्याण के लिए करते हैं।**

: डॉ. राधाकृष्णन

नदियों का महत्व

भारत नदियों का देश है। गंगा, जमुना, सरस्वती, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा, ताप्ती, चंबल जैसी कई नदियों का उद्गम स्थल भारत है। भारत की संस्कृति नदियों से प्रभावित है। नदियां मानव सभ्यताओं की रीढ़ हैं, जो मीठे पानी को उपलब्ध कराती हैं। जोकि मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकता है। अतीत और वर्तमान की सभी सभ्यताएं नदियों के किनारे ही विकसित हुई हैं। दूसरे शब्दों में यह पृथ्वी की नसें हैं, जो जीवन को संभव बनाती हैं। प्राचीन काल से ही लोगों को नदी घाटियों की उर्वरता का एहसास था इसलिए वह यहाँ बसने लगे और खेती के माध्यम से अपना जीवन-यापन करने लगे। नदिया पहाड़ों से निकलती हैं और वह अपने साथ चट्टान, रेत एवं मिट्टी नीचे ले जाती हैं, फिर वह मैदानी इलाकों में प्रवेश करती हैं। पहाड़ों से पानी धीरे-धीरे बहता रहता है। नतीजतन वह उपजाऊ मिट्टी नदियों के किनारे पर जमा हो जाती है। इस प्रकार खेतों में लगातार ताजा उपजाऊ मिट्टी आदि रहती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि नदियां कृषि उद्देश्यों के लिए एक महत्वपूर्ण आधार हैं। नदियों में रेगिस्तान को उत्पादक खेतों में बदलने की क्षमता है। इसके अलावा हम उनका उपयोग बांध बनाने में भी कर सकते हैं। नदियां पहाड़ों और पहाड़ियों से खनिज पदार्थ नीचे लाती हैं। जल विद्युत उत्पादन के लिए नदी पर बांध बनाते हैं। पर्यावरण संरक्षण में भी नदियों का अभूतपूर्व योगदान है। नदियाँ वन्यजीवों को संरक्षित करती हैं, इसके अलावा नदियाँ पर्यटन को बढ़ावा देने और मत्स्य पालन को विकसित करने के लिए भी उपयोग में आती हैं। वर्तमान समय में प्रदूषण बढ़ने के कारण नदियों को बचाना पहले से भी कहीं ज्यादा जरूरी हो गया है। इसके लिए हमें अलग-अलग उपाय करने होंगे। सबसे पहले हमें बायोडिग्रेडेबल क्लीनिंग उत्पादों का इस्तेमाल करना चाहिए और शरीर धोने के लिए रासायनिक उत्पादों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। नदियों के किनारे कपड़े धोना, मूर्तियों का विसर्जन और गंदगी का विसर्जन करना प्रतिबंधित होना चाहिए। नदियां मनुष्य जीवन के लिए बहुत जरूरी हैं। वह मनुष्य के लिए प्रकृति का वरदान हैं। वह हमें बहुत सी चीजें प्रदान करती हैं लेकिन आजकल बहुत बड़े पैमाने पर प्रदूषित हो रही हैं। इस प्रदूषण को रोकने और बेहतर भविष्य के लिए नदियों को बचाने के लिए एक साथ प्रयास करना चाहिये|

मनीषा औसारी
नबीए द्वितीय वर्ष

"गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती,
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन सन्निधिम् कुरु। "

:पूर्ण मंत्र

बचपन का सपना

भारत के एक छोटे से गांव में युवा छात्र आनंद अपने परिवार के साथ रहता था। वह पेड़-पौधों के प्रति अति संवेदनशील था। उसे हमेशा प्रकृति के साथ समय बिताना अच्छा लगता था। एक दिन कॉलेज में एक महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट के लिए आनंद को विषय चुनने को कहा गया। उसने 'कागज बचाओ' विषय चुना। आनंद जानता था कि कागज बचाने से न केवल पेड़ों की रक्षा की जा सकती है बल्कि पर्यावरण को भी सुरक्षित रखा जा सकता है। उसने अपनी परियोजना पर गहराई से शोध करना शुरू कर दिया। शोध के दौरान आनंद ने पाया कि हर साल लाखों पेड़ कागज बनाने के लिए काट दिए जाते हैं। पेड़ों की कटाई से पर्यावरण पर बुरा असर पड़ता है और ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याएं बढ़ती हैं। उसे यह समझ आया कि कागज की बचत करके वह अपने समाज और पर्यावरण के लिए बहुत कुछ कर सकता है।

आनंद ने अपने प्रोजेक्ट में कागज बचाने के कई उपाय सुझाए। उसने बताया कि डिजिटल नोट्स का प्रयोग करके, दोनों तरफ से कागज का उपयोग करके और उपयोग किए हुए कागज को पुनः प्रयोग में लाकर तथा बाजार में पेपर नैपकिन के स्थान पर स्वयं के रुमाल का प्रयोग कर, सामान के लिए स्वयं के झोले का प्रयोग कर, कागज बचाया जा सकता है। आनंद अपनी इस मुहिम से पूरे गांव में जागरूकता फैलाता है। लोग उससे प्रेरित होकर कागज बचाने के नए-नए उपाय अपनाने लगते हैं और गांव का जंगल फिर से हरा-भरा हो जाता है। आनंद को अपने इस अभियान पर बहुत संतोष होता है। उसे लगता है कि मैं किसी ने किसी रूप में अपनी धरती मां के ऋण को चुका रहा हूं।

हर्ष पटेल
बीकॉम फर्स्ट ईयर

- "बार-बार आती है मुझको मधुर याद बचपन तेरी।
  गया ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी॥
  चिंता-रहित खेलना-खाना वह फिरना निर्भय स्वच्छंद।
  कैसे भूला जा सकता है बचपन का अतुलित आनंद?
  ऊँच-नीच का ज्ञान नहीं था छुआछूत किसने जानी?
  बनी हुई थी वहाँ झोंपड़ी और चीथड़ों में रानी॥"

: सुभद्रा कुमारी चौहान

अंगवर्ती मुहावरे

1.**आँख खुलना** = **होश में आना।**

प्रयोग- हल्कू का सारा खेत जब नील गायें चर गईं तब उसकी आँख खुली।

2.**अँगूठा दिखाना** = **मना करना।**

प्रयोग- कमला ने जब संध्या से उसकी हिन्दी की कॉपी माँगी तो उसने कमला को अँगूठा दिखा दिया।

3.**आँख का तारा** = **बहुत प्यारा।**

प्रयोग- दादा-दादी के लिए तो उनका पोता आँख का तारा होता है।

4.**आँखों में धूल झोंकना** = **धोखा देना।**

प्रयोग- चोर पुलिस की आँखों में धूल झोंककर भाग गया।

5.**उँगली उठाना** = **दोषारोपण करना।**

प्रयोग – दुर्मुख की तो आदत ही उँगली उठाने की है।

6.**कमर कसना** = **कार्य करने को तैयार होना।**

प्रयोग- परीक्षा में सफल होना है तो अभी से कमर कस के तैयारी में लग जाओ।

7.**कान का कच्चा होना** = **दूसरों की बात पर शीघ्र विश्वास कर लेना।**

प्रयोग- जो अधिकारी कान का कच्चा होता है उससे न्याय की अपेक्षा कैसे की जा सकती है?

8.**कान भरना** = **चुगली करना।**

प्रयोग- पुराने जमाने के नाई का काम होता था राजा के बाल काटते-काटते कान भरना।

9.**काला मुँह होना** = **बदनाम होना।**

प्रयोग- रिश्वत लेते हुए पकड़े जाने पर अंकुर का शर्म से काला मुँह हो गया।

10.**गाल बजाना** = **बेकार की बातें करना।**

प्रयोग- आजकल के नेता काम तो कोई करते नहीं वरन् मंच से गाल बजाते हैं।

11.**गले का हार** = **प्रिय वस्तु।**

प्रयोग- नानी के लिए अपना नाती तो गले का हार है।

नाम:- कल्पना ओसारी

कक्षा:- बी.ए. चतुर्थ वर्ष

प्राणीपरक लोकोक्तियां

1.नौ सौ चहे मार बिल्ली हज को चली = जीवन भर पाप किया, मरने के वक्त साधू बन गए।
प्रयोग- जवानी भर दूसरों को ठगते रहे और जब बुढ़ापा आ गया तब रामनाम जपने लगे। आखिर नौ सौ चूहे मार बिल्ली हज को चली।

2.बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद = अयोग्य व्यक्ति अच्छी वस्तु के गुण नहीं जान सकता।
प्रयोग- अशिक्षित व्यक्ति के सामने प्रगतिवाद की बातें करने से क्या लाभ, बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।

3.बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी = दुष्ट व्यक्ति को एक-न-एक दिन सजा अवश्य मिलेगी
प्रयोग- पुलिस से चोर कब तक बचकर रह सकता है एक दिन तो पकड़ा जाएगा आखिर बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी।

4.हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और = दिखावटी होना।
प्रयोग- देश की भलाई के लिए बड़े-बड़े नेता बातें कुछ और करते हैं कार्य कुछ और हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और होते हैं।

5.बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा = अचानक किसी वस्तु का प्राप्त होना।
प्रयोग- मैं तो गई थी कविता पाठ सुनने पर वहाँ मुझे अध्यक्ष बना मंचासीन कर दिया तो बहुत खुश हो बोली बिल्ली के भाग से छींका टूटा।

6.भैंस के आगे बीन बजाना = मूर्ख को ज्ञान सिखाना बेकार।
प्रयोग – रीता को बार-बार सिलाई सिखाने से क्या फायदा उसके दिमाग में कुछ नहीं बैठने वाला। भैंस के आगे बीन बजाना।

7.ऊँट के मुँह में जीरा = आवश्यकता की तुलना में बहुत कम पूर्ति।
प्रयोग – तीन करोड़ लोग बेरोज़गार है और सरकार ने तीन सौ पद स्वीकृत किए हैं, यह तो ऊँट के मुँह में जीरा है।

8.साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे = बिना हानि हुए काम हो जाए।
प्रयोग- श्यामलाल अपने से बलशाली रामलाल से लड़ना ठीक नहीं कुछ ऐसी युक्ति निकालो की साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।

9.छंछूदर के सिर में चमेली का तेल = अयोग्य के पास अच्छी वस्तु।
प्रयोग- अपनी कामवाली बाई के घर एल.सी.डी. देखकर मेरी पड़ोसन बोली- 'छछूदर के सिर में चमेली का तेल'।

10.**गीदड़ की शामत आए तो गाँव की तरफ भागे** = **विपत्ति में बुद्धि भ्रष्ट। प्रयोग- मैंने ट्रैफिक भरे रोड पर एक साँप को चलते देखा तो लगा ये तो किसी वाहन के नीचे आ मर जाएगा। गीदड़ की शामत आए तो गाँव की तरफ भागे।**

11.**खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे** = **लज्जित होने पर निरपराध पर क्रोधित होना।**
प्रयोग- जब मां ने मुझे डांटा तो मैंने अपने छोटे भाई को बांट दिया। तब भाई बोला खिसियानी बिल्ली खंभा नोंचे।

12.**जल में रहकर मगर से बैर** = **अधिकारियों से बैर ठीक नहीं।**
प्रयोग- देखो बेटा मेरी सीख हमेशा याद रखना अपने बड़े अधिकारियों की अवज्ञा मत करना। 'जल में रहकर मगर से बैर' नहीं किया जाता।

13.**तबेले की बला, बंदर के सिर** = **दोष और का भोगे और।**
प्रयोग- सोहन तो हत्या करके फरार हो गया, पुलिस वालों ने उसके घरवालों को थाने में बिठा लिया। 'तबेले की बला, बंदर के सिर'।

14.**हाथी के पाँव में सबका पाँव** = **बड़े आदमी की बात में सब सम्मिलित।**
प्रयोग- दफ़्तर में अफसर जो निर्णय लेता है उसे अधीनस्थ कर्मचारियों को मानना ही पड़ता है क्योंकि 'हाथी के पाँव में सबका पाँव' समाया रहता है।

नाम:- सतीश निनामा

कक्षा:- बी.ए. प्रथम वर्ष

- **निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल**
  बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।
- **इक भाषा इक जीव इक मति सब घर के लोग**
  तबै बनत है सबन सों, मिटत मूढ़ता सोग।
- **निज भाषा उन्नति बिना, कबहुं न ह्यैहैं सोय**
  लाख उपाय अनेक यों भले करे किन कोय।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र

<u>सपनों की रोशनी</u>

गाँव सेवनिया, भोपाल, जहाँ न तो पक्की सड़कें थीं और न ही अस्पताल। वहाँ निवास करने वाला चौधरी परिवार अत्यन्त साधारण था। परिवार के मुखिया किशनलाल एक मेहनती किसान थे। उनका छोटा सा परिवार था, जिसमें पति-पत्नी और दो बच्चों सहित चार सदस्य थे। एक दिन किशनलाल जी अपने खेत में हल चला रहे थे। उस दिन बहुत तेज गर्मी थी, जिस कारण किशनलाल जी हल चलाते हुए चक्कर खाकर गिर पड़े। उनके खेत पड़ोसी ने जब उन्हें बेहोश पड़ा देखा, तो उन्हें आनन-फानन उठाकर उनके घर ले गया। घर पहुंचते ही किशनलाल जी को उल्टी-दस्त शुरू हो गए और उनकी तबीयत और बिगड़ गई। ऐसे में उन्हें इलाज की सख़्त ज़रूरत थी लेकिन गाँव में कोई अस्पताल नहीं था। इलाज के लिए किशनलाल को शहर में ले जाया गया। परिवार और पड़ोस के लोगों ने उन्हें बैलगाड़ी से शहर ले जाने की कोशिश की लेकिन रास्ते में ही किशनलाल की जीवनलीला समाप्त हो गई। इस घटना ने किशनलाल के परिवार बुरी तरह झकझोर कर रख दिया, ख़ासकर उनकी 12 **साल की बेटी गुड़िया के लिए। गुड़िया ने अपने पिता को खोने के बाद निश्चय किया कि वह बड़ी होकर डॉक्टर बनेगी क्योंकि गांव में डॉक्टर न होने के कारण ही उसके पिता की असमय मृत्यु हुई।**

अपनी पढ़ाई के दौरान गुड़िया ने बहुत संघर्ष किया क्योंकि पिता के जाने के बाद उसके परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई थी लेकिन उसकी लगन और मेहनत ने गाँव के लोगों को प्रभावित किया। गाँव के लोग उसके सपने को सच करने के लिए आगे आए। किसी ने शुल्क का खर्च उठाया तो किसी ने शुल्क जमा किया। गुड़िया ने पढ़ाई में दिन-रात एक कर दिया। कड़ी मेहनत और लगन के बाद अंततः गुड़िया ने डॉक्टर की डिग्री हासिल कर ली। गुड़िया की इस उपलब्धि से सारे गाँव में खुशी की लहर दौड़ गई। वह अब सिर्फ गुड़िया नहीं बल्कि 'डॉ. गुडिया' बन गई थी।

प्रेरणा की मिसाल गुड़िया की कहानी ने गाँव की लड़कियों को प्रेरणा दी। गुड़िया की इस कहानी से प्रेरणा लेकर गाँव की लड़कियाँ पढ़-लिखकर अपने और अपने माता-पिता के सपनों को पूरा करने की हर कोशिश कर रही हैं। सभी लड़कियाँ गुड़िया की तरह बनना चाहती हैं। उसकी इस उपलब्धि से गाँव में खुशी की लहर दौड़ गई। वह अब सिर्फ गुडियों नही है, बल्कि "डॉ. गुडिया" बन गई थी।

डॉक्टर बनने के बाद गुड़िया के पास शहर में नौकरी करने के कई प्रस्ताव आए लेकिन गुड़िया ने सारे प्रस्ताव ठुकरा दिए। उसने अपने गाँव में एक अस्पताल खोलने का फैसला लिया। गुड़िया के इस फैसले को वास्तविकता में परिणत करने में गाँव वालों ने उसकी मदद की। गाँव वालों की मदद से गुड़िया ने गाँव में एक अस्पताल खोला, जहाँ गुड़िया ने अपना काम शुरू किया। अब गुड़िया के इस अस्पताल में गांव वालों कि मुफ़्त इलाज किया जाता है।

गुड़िया के इस कदम से पूरा गाँव बदल गया। अब बीमार लोगों को शहर नहीं जाना पड़ता है। उसका अस्पताल न केवल स्वास्थ्य सेवा प्रदान करता है, बल्कि लोगों को प्रेरणा भी देता है।

सपने को अपनी मेहनत और लगन से पूरा किया जा सकता है। उसकी कहानी यह सन्देश देती है कि अगर इरादा मजबूत हो, तो किसी भी मुश्किल को पार किया जा सकता है। सपनों की ये रोशनी अब सेवनिया के हर घर मे जगमगा रही थी।

नाम:- दीपक शर्मा

कक्षा:- बी.ए. प्रथम वर्ष

* '**विपत्ति से बढ़कर अनुभव सिखाने वाला कोई विद्यालय आज तक नहीं खुला**'

* **पहाड़ों की कंदराओं में बैठकर तप कर लेना सहज है, किन्तु परिवार में रहकर धीरज बनाये रखना सबके वश की बात नहीं**!

* **सौभाग्य उसी को प्राप्त होता है, जो अपने कर्तव्य पथ पर अविचलित रहते हैं।**

-मुंशी प्रेमचंद

नारी है वो नारी है

नारी है वो नारी है,
तभी तो संस्कारो पर भारी हैं |
कभी बहन तो कभी पत्नी की जिम्मेदारी उठा री हैं,
जब वो लेती माँ का रूप सारी दुनिया नतमस्तक हारी है |
नारी है वो नारी है
बेटी, बहन, दोस्त हर रूप में प्यारी है,
कभी वो लक्ष्मीबाई बनकर युद्ध भूमि में उतर आई है,
तो कभी सीता बन वन जाकर पतिव्रता धर्म निभा रही है |
नारी है वो नारी है

विंध्या विश्वकर्मा

अतिथि विद्वान

कंप्यूटर विज्ञान विभाग

मानवाधिकार और भारतीय महिलाओं की बदलती स्थिति

आधुनिक विश्व व्यवस्था में मानवाधिकारों की अवधारणा ने विशेष महत्व प्राप्त किया है। संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के बाद यह स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया कि प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, समान गरिमा और अधिकारों का अधिकारी है। फिर भी सामाजिक यथार्थ यह दर्शाता है कि महिलाओं को लंबे समय तक इन अधिकारों से पूर्ण रूप से वंचित रखा गया। प्रकृति ने स्त्री और पुरुष को जैविक रूप से भिन्न अवश्य बनाया है, किंतु सामाजिक संरचना ने इन भिन्नताओं को असमानता में परिवर्तित कर दिया। पितृसत्तात्मक व्यवस्था, रूढ़िवादी सोच और परंपरागत मान्यताओं ने महिलाओं की स्वतंत्रता और निर्णय क्षमता को सीमित किया। परिणामस्वरूप, उन्हें शिक्षा, संपत्ति, रोजगार और राजनीतिक सहभागिता जैसे क्षेत्रों में समान अवसर नहीं मिल सके।

अंतरराष्ट्रीय प्रयास और महिला अधिकार: 1948 की मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा ने यह सिद्धांत स्थापित किया कि लिंग के आधार पर भेदभाव अस्वीकार्य है। 1975 को अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित किया गया, जिसने वैश्विक स्तर पर महिला सशक्तिकरण की दिशा में नई चेतना उत्पन्न की। 1993 के वियना सम्मेलन में यह स्पष्ट किया गया कि "महिला अधिकार ही मानव अधिकार हैं। 1995 के बीजिंग सम्मेलन में विश्व के अनेक देशों ने महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए ठोस कार्य योजना को स्वीकार किया। इन प्रयासों का उद्देश्य केवल अधिकारों की घोषणा करना नहीं था, बल्कि उन्हें व्यवहारिक रूप से लागू करना भी था।

भारतीय संदर्भ में संवैधानिक प्रावधान: स्वतंत्र भारत के संविधान ने प्रारंभ से ही लैंगिक समानता को महत्व दिया है। अनुच्छेद 14 सभी नागरिकों को कानून के समक्ष समानता प्रदान करता है। अनुच्छेद 15(3) राज्य को महिलाओं के हित में विशेष प्रावधान बनाने की अनुमति देता है। अनुच्छेद 16 सार्वजनिक सेवाओं में समान अवसर सुनिश्चित करता है। इसके अतिरिक्त, 73वें और 74वें संविधान संशोधनों द्वारा पंचायती राज संस्थाओं और नगर निकायों में महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था की गई, जिसने राजनीतिक स्तर पर उनकी भागीदारी को बढ़ावा दिया। कई राज्यों में यह आरक्षण 50 प्रतिशत तक कर दिया गया है, जो लोकतांत्रिक समावेशन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

सामाजिक चुनौतियाँ और वास्तविकता: यद्यपि कानूनी ढांचा महिलाओं के पक्ष में है, परंतु सामाजिक स्तर पर अनेक चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं। अशिक्षा, आर्थिक निर्भरता,

घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, बाल विवाह और लैंगिक भेदभाव जैसी समस्याएँ महिलाओं के समग्र विकास में बाधा उत्पन्न करती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक नियंत्रण और पारंपरिक मान्यताएँ महिलाओं की स्वतंत्र अभिव्यक्ति को सीमित करती हैं। वहीं शहरी क्षेत्रों में भी कार्यस्थल पर असमान वेतन और उत्पीड़न जैसी समस्याएँ देखने को मिलती हैं। इससे स्पष्ट है कि केवल विधिक प्रावधान पर्याप्त नहीं हैं; सामाजिक मानसिकता में परिवर्तन आवश्यक है।

बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता: महिलाओं की स्थिति को समझने के लिए केवल लैंगिक आधार पर नहीं, बल्कि जाति, वर्ग, समुदाय और क्षेत्रीय असमानताओं को भी ध्यान में रखना होगा। सामाजिक संरचना के विभिन्न स्तर महिलाओं के अवसरों और जीवन स्तर को प्रभावित करते हैं। इसलिए महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा, आर्थिक स्वावलंबन, राजनीतिक जागरूकता और सामाजिक सुधार—इन सभी क्षेत्रों में समन्वित प्रयास आवश्यक हैं। साथ ही पुरुषों की मानसिकता में परिवर्तन और समानता आधारित सामाजिक मूल्यों का विकास भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

<u>निष्कर्ष</u> : महिलाओं के मानवाधिकारों की स्थापना केवल संवैधानिक प्रावधानों से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए सामाजिक न्याय, जागरूकता और निरंतर संघर्ष की आवश्यकता है। जब तक महिलाओं को समान अवसर, सम्मान और निर्णय लेने की स्वतंत्रता व्यवहारिक रूप से प्राप्त नहीं होगी, तब तक वास्तविक समानता का सपना अधूरा रहेगा। अतः आवश्यक है कि महिलाओं के अधिकारों को केवल कागजी घोषणा न मानकर उन्हें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लागू किया जाए। यही सच्चे अर्थों में मानवाधिकारों की स्थापना होगी।

डॉ.प्रमिला यादव
अतिथि व्याख्याता राजनीति विज्ञान

मानवीय मूल्य मनुष्य के चरित्र एवं संस्कार का निर्माण करते हैं।

प्रस्तावना :- मूल्य शब्द से तात्पर्य किसी भौतिक वस्तु अथवा मानसिक अवस्था के उस गुण से है, जिसके द्वारा मनुष्य के किसी उद्देश्य अथवा लक्ष्य की पूर्ति होती है। मूल्य का व्यक्ति के आचरण, व्यक्तित्व, कार्यों, संस्कारों पर स्पष्ट रूप से प्रभाव पड़ता है। बड़ों का आदर-सम्मान करना, बड़ों का कहना मानना, सभी से प्रेमपूर्वक मिलकर रहना, कहीं ना कहीं मानवीय मूल्यों का ही आधार है। सभी धर्मों का सम्मान करना हमारा धर्म है, बाकी धर्मों का उतना ही सम्मान करना जितना हम अपने धर्म का करते हैं तथा उनके आदर्शों को अपनाना भी मानवीय मूल्य का आधार है। मानवीय मूल्य का अर्थ मनुष्य जीवन पर्यंत सीखता रहता है तथा उसकी अनुभव में निरंतर अभिवृद्धि होती है। जैसे मनुष्य अधिक सीखना चाहता है और परिपक्व होता है। वह ऐसे अनुभव प्राप्त करता है, जो उसके व्यवहार को निर्देशित करते हैं और जीवन को दिशा प्रदान करते हैं, उन्हें मानवीय मूल्य कहा जाता है। सौंदर्यात्मक मूल्य प्रकृति कला एवं मानवीय मूल्य के जीवन को सौंदर्य को कहते हैं। मनोवैज्ञानिक मूल्य जिसे प्रेम, दया, करुणा आदि। बुनियादी मानवीय मूल्यों से तात्पर्य उन मूल्यों से है जो मानव होने के मूल में है। मानवीय मूल्य वे मूल्य है जो हमारे व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं और परिभाषित करते हैं कि हम जीवन में कैसे कार्य करते हैं। यह मूल्य बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यह बताते हैं कि हम कौन हैं और वह ही जीवन में हमारा मार्गदर्शन करते हैं।

मानवीय मूल्य की अवधारणा और महत्व: मालवीय मूल्य वे मूल्य हैं, जो हमारे व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। हमारे द्वारा धारण किए गए मूल्य यह निर्धारित करते हैं कि हम कौन हैं और क्या बनना चाहते हैं? साथ ही हम अपना जीवन कैसे जीते हैं और हम रोजमर्रा के आधार पर क्या निर्णय लेते हैं? इन मूल्यों के बिना हमारा जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है और हम जो कुछ भी करते हैं या कहते हैं उनका कोई अर्थ नहीं होगा। सभी मनुष्यों में किसी न किसी तरह से यह मूल्य होते हैं और यह हम पर निर्भर है कि हम कौन से मूल्यों को सबसे अधिक प्रिय मानते हैं। 20वीं सदी की दार्शनिक मार्थो तुसबाम ने 10 जन्मजात मानवीय मूल्य की एक सूची प्रस्तुत की है: सत्य, सौंदर्य, न्याय, साहस, संयम, ज्ञान, प्रेम, समानता, शक्ति और आशा। यह वे मूल्य है जिन्हें सभी मनुष्यों को अपने दैनिक जीवन में बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। बड़े पैमाने पर समाज के लिए इन मूल्यों को पहचानना है ताकि लोगों को हमेशा पता रहे की वह किस आधार पर खड़े हैं। संस्कारों से बड़ी कोई वसीयत नहीं होती और ईमानदारी से बड़ी कोई विरासत नहीं होती है। यह मानवीय मूल्य हमें हमारे पूर्वजों के संस्कारों से प्राप्त होती है।

मानवीय मूल्य का जीवन में महत्व: मानवीय मूल्य का महत्व यह है कि ये वह समझ प्रदान करते हैं कि लोगों को अपने जीवन में क्या महत्वपूर्ण लगता है? मानवीय मूल्य के अलग-अलग पहलू हैं। उदाहरण के लिए हम देखें तो सत्य, निष्ठा, नैतिकता और परोपकार सभी मानवीय मूल्यों के पहलू हैं। मूल्य प्रणाली स्थित नहीं हैं। इसके संदर्भ सामाजिक स्थिति के आधार पर बदल सकते हैं। इसका मतलब यह है कि कुछ लोगों के पास एक संदर्भ के लिए मूल्य का एक निश्चित सेट होता है लेकिन दूसरे संदर्भ में भी उनके मूल्य पूरी तरह से भिन्न हो सकते हैं। मूल्य का एक विशिष्ट पहलू आत्मसम्मान का विचार है। आत्मसम्मान के दो रूप हैं आंतरिक और बाहय। बाहरी आत्म सम्मान इस बात से संबंधित है कि आप स्वयं को कैसे समझते हैं? यदि किसी का बाहरी सम्मान उच्च है ,वे यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि आप स्वयं को कैसे समझते हैं तो वह यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि अन्य लोग भी उनके बारे में अच्छा सुनिश्चित करें। जबकि यदि किसी का आंतरिक सम्मान उच्च है तो वे केवल यही चाहते हैं कि दूसरे लोग उन्हें पसंद करें क्योंकि वह स्वयं ऐसा करते हैं। व्यवहार अगर अच्छा है, तो मन ही मंदिर है। आहार अगर अच्छा है, तो तन ही मंदिर है। विचार अगर अच्छे हैं, तो मस्तिष्क ही मंदिर है और अगर तीनों अच्छे हैं, तो जीवन ही मंदिर है । यह संस्कार पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे हैं, जो मानवीय मूल्य को जीवन दर्शन देते हैं।

डॉ. अभिलाषा ठाकुर
सहायक प्राध्यापक हिंदी

मूल्य आधारित शिक्षा - समय की आवश्यकता

आज भारतीय समाज में लोगों द्वारा जिस प्रकार के व्यवहार का प्रकटीकरण किया जा रहा है, उससे आभास होता है कि नैतिक मूल्य विलुप्त होते जा रहे हैं। समाज मूल्य विहीन दिखाई पड़ रहा है। यही कारण है कि आज भौतिक उन्नति के बावजूद भी देश को अराजकता की स्थिति में गुजरना पड़ रहा है| किसी भी सभ्य समाज के लिए शिक्षा प्राण है तथा जीवन मूल्य उसकी आत्मा। मूल्य का संबंध जीवन के दृष्टिकोण से है। यदि मूल्यों को जीवन कहा जाए, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। व्यक्ति स्वभाव से ही सामाजिक प्राणी है, वह समाज से अलग नहीं रह सकता। अतः व्यक्ति और समाज को अलग नहीं किया जा सकता है क्योंकि उन दोनों का अस्तित्व एक दूसरे में निहित है। मूल्य की अवधारणा का तात्पर्य सिद्धांत आदर्श तथा नैतिकता से है। सामाजिक संपर्क द्वारा नैतिक विकास होता है।

वर्तमान समय में मूल्य आधारित शिक्षा महत्वपूर्ण हो गई है क्योंकि यह व्यक्तियों को समाज के जिम्मेदार और उत्पादक सदस्यों के रूप में विकसित होने में मदद करती है। मूल्य आधारित शिक्षा का लक्ष्य छात्रों को अच्छे नागरिक और समाज के उत्पादक सदस्य बनने के लिए तैयार करना है। मूल्य आधारित शिक्षा का अर्थ छात्रों को नैतिक मूल्य, धैर्य, ईमानदारी, प्रेम, सद्भावना, दया, करुणा, मानवता इत्यादि मूल्यों को सिखाना है। साथ ही विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, विज्ञान व तकनीकी, आदर्श शिक्षा पर तथा आर्थिक समृद्धि प्रदान करने वाली शिक्षा पर है और उसके सार्थक परिणाम आज विश्व के सामने है। जीवन मूल्य ऐसे सद्गुणों का समूह हैं, जिन्हें अपनाकर मनुष्य अपने निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति करने हेतु जीवन पद्धति का निर्माण करता है। इससे व्यक्तित्व में निखार आता है। मानव मूल्यों में धारणाएं, विचार, विश्वास, मनोवृत्ति, आस्था आदि समेकित होते हैं। यह मानव मूल्य एक और व्यक्ति के अंतःकरण द्वारा नियंत्रित होते हैं, तो दूसरी ओर समाज की संस्कृति परंपरा पर्यावरण द्वारा पोषित होते हैं।

21वीं सदी में प्रवेश के साथ ही साथ हम वैज्ञानिक तकनीकी में भी बहुत आगे निकल गए हैं। तकनीकी यंत्रों का उपयोग करते-करते मनुष्य स्वयं ही एक मानव यंत्र बनता जा रहा है। मानव हृदय की कोमल आवश्यकताओं के प्रति जागरूकता लाने के लिए मूल्य शिक्षा की आवश्यकता है। प्रत्येक व्यक्ति प्रतियोगिता में शामिल होकर एक-दूसरे को पीछे छोड़ने में ही लगे हुए हैं। जिससे समाज का प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से नुकसान होता है। उच्च शिक्षा तब ही लाभप्रद होगी, जब वह मूल्यपरक होगी। प्रत्येक विषय का शिक्षण मूल्यों को ध्यान में रखकर करना आवश्यक है। जब तक उसमें नैतिकता समाहित नहीं है, तब तक विषय अध्ययन समाज

कल्याण के लिए पूर्ण नहीं हो सकता। अतः युवा पीढ़ी को सही दिशा-निर्देश देना चाहिए, जिससे उसका भविष्य उज्ज्वल हो। हमारे पुरातन मूल्यों के समुचित ज्ञान से नए मजबूत पुरुषार्थ की स्थापना के लिए मूल्य शिक्षा की आवश्यकता है।

भारत एक लोकतांत्रिक देश है। इस लोकतांत्रिक राष्ट्र की स्थापना व अस्तित्व के लिए उच्च मूल्यों का आचरण आवश्यक है। अतः एक अच्छे नागरिक के कर्तव्यों के निर्धारण के लिए मूल्य शिक्षा अति आवश्यक है। जिससे समाज में रहने वाली महिलाओं व बच्चों को जीवन के समुचित अवसर मिल सकें तथा सामाजिक सुरक्षा सभी के लिए हो, इसके लिए मूल्य आदर्श शिक्षा आवश्यक है। वर्तमान समय में मूल्यों की गिरावट के प्रमुख कारणों में मुख्यतः आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण, सामाजिक परिवर्तन व अभिभावकों की अपने कर्त्तव्य के प्रति उदासीनता है। मूल्यों के विकास के लिए अत्यधिक आवश्यक है कि आज सदाचार, सत्य, अहिंसा, प्रेम, शांति जैसे उच्च मूल्यों की स्थापना की जाए। यह मूल्य न केवल प्रगति एवं शांति के लिए आवश्यक हैं वरन् देश के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

डॉ. सुनीता शाकले
सहायक प्राध्यापक प्राणी शास्त्र

रोचक जानकारी

1. **शुक्र ग्रह का एक दिन पृथ्वी के एक साल के बराबर होता है।**

2. **कंगारू एक ऐसा जानवर है जो उल्टा नहीं चल सकता है।**

3. **हाथी एक ऐसा जानवर है जो कूद नहीं सकता हैं।**

4. **ब्लू व्हेल एक बार में** 2 **हजार गुब्बारे जितनी सांस लेती है और इतनी ही सांसों को छोड़ती है।**

5. **नासा के अनुसार संस्कृत कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग के लिये सबसे अच्छी भाषा है।**

6. **एक पेन्सिल में इतना ग्रेफाइट होता है कि इससे** 35 **मील तक लंबी लाइन खींच सकते हैं और करीब** 45000 **शब्द लिखे जा सकते हैं।**

7. **दुनिया के** 100 **सबसे अमीर व्यक्ति एक साल में इतना कमा लेते हैं कि उससे दुनिया की सारी गरीबी को** 4 **बार खत्म (समाप्त) किया जा सकता है।**

8. **यदि हमें** 1% **पानी की कमी होती है तो हमें प्यास लग जाती है वहीं यह कमी अगर** 10% **हो जाए तो व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।**

9. **हमारे दिमाग में अच्छी यादों से ज्यादा बुरी यादों को याद रखने की क्षमता होती है।**

10. **बाएं हाथ से काम करने वाले लोग दाएं हाथ से काम करने वाले लोगों की तुलना में कम्प्यूटर और खेलों में ज्यादा तेजी से काम करते हैं।**

11. **सिर्फ एक घंटे तक भी अगर हेडफोन का उपयोग कर लिया जाए तो आपके कानों में बैक्टीरिया** 700 **गुना ज्यादा बढ़ जाते हैं।**

12. 30 **से** 35 **मि. की पढ़ाई के बाद** 10 **मि. का ब्रेक लेने से पढ़ा हुआ याद रखने का सबसे कारगर तरीका है।**

13. **पढ़ना और सपने देखना हमारे दिमाग के अलग-अलग भागों की क्रिया है इसीलिये हम सपने में पढ़ नहीं पाते।**

14.**जब अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष से वापस आते हैं तब उनकी लंबाई** 2 **इंच बढ़ जाती है। इसका कारण यह है कि हमारी रीढ़ की हड्डी से जुड़ी लचीली हड्डियां गुरुत्वाकर्षण बल की गैर हाजिरी में फैलने लगती है।**

15. **शतंरज का आविष्कार भारत में ही हुआ था। इसे 'चंतुरंग संस्कृत' के नाम से जाना जाता था।**

डॉ. नन्दा भाटिया
सहा. प्राध्यापक रसायनशास्त्र

प्रकृति की पुकार: चिपको आंदोलन और जनशक्ति का उदाहरण

जब इन वनों पर बाहरी ठेकेदारों द्वारा अंधाधुंध कटाई का खतरा मंडराने लगा, तब स्थानीय समुदाय ने इसे अपने अस्तित्व पर संकट के रूप में महसूस किया। उत्तराखंड के शांत, हरित और सुरम्य पहाड़ी क्षेत्रों से उठी एक साधारण सी आवाज ने 1970 के दशक में पूरे देश की चेतना को झकझोर दिया। यह आवाज केवल विरोध की नहीं थी, बल्कि प्रकृति के प्रति गहरे लगाव, जीवन के आधारभूत संसाधनों की रक्षा और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित करने की पुकार थी। हिमालय की गोद में बसे इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए जंगल केवल पेड़ों का समूह नहीं थे, बल्कि जल, ईंधन, चारा, औषधि और आजीविका का प्रमुख स्रोत थे।

इसी संवेदनशीलता और जनजागरूकता से जन्म हुआ चिपको आंदोलन का, जिसने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक नया अध्याय लिखा। इस आंदोलन ने यह सिद्ध कर दिया कि साधारण ग्रामीण, विशेषकर महिलाएँ, भी असाधारण साहस और दृढ़ता के साथ प्रकृति की रक्षा कर सकती हैं। यह केवल पेड़ों को बचाने का प्रयास नहीं था, बल्कि मानव और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करने का एक सशक्त संदेश था।

आज, जब पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापवृद्धि, जैव विविधता के क्षरण और प्राकृतिक संसाधनों के अति-दोहन जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है, तब इस आंदोलन की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ जाती है। चिपको आंदोलन हमें यह सिखाता है कि विकास की दौड़ में यदि प्रकृति की अनदेखी की गई, तो उसके दुष्परिणाम मानव जीवन के लिए विनाशकारी हो सकते हैं। इसलिए यह आंदोलन केवल अतीत की एक घटना नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत है, जो हमें प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने की प्रेरणा देता है।

आंदोलन की पृष्ठभूमि: संकट की जड़ें

हिमालयी क्षेत्र सदियों से प्राकृतिक संसाधनों का भंडार रहा है। यहाँ के घने जंगल न केवल स्थानीय लोगों के जीवन का आधार थे, बल्कि जल स्रोतों, मिट्टी की उर्वरता और जैव विविधता के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। लेकिन औपनिवेशिक काल से ही वनों का व्यावसायिक दोहन शुरू हो गया था। स्वतंत्रता के बाद भी यह प्रवृत्ति जारी रही। सरकार द्वारा बाहरी ठेकेदारों को लकड़ी काटने की अनुमति दी गई, जिससे स्थानीय लोगों के अधिकारों की अनदेखी हुई। 1970 में अलकनंदा क्षेत्र में आई विनाशकारी बाढ़ ने यह स्पष्ट कर दिया कि वनों की अंधाधुंध कटाई के गंभीर परिणाम हो सकते

हैं। इस आपदा ने लोगों को सोचने पर मजबूर किया कि यदि जंगल नहीं बचेंगे, तो उनका अस्तित्व भी संकट में पड़ जाएगा।

चमोली से उठी चिंगारी

इस आंदोलन की शुरुआत चमोली जिला के गांवों से हुई। 1973 में जब एक खेल सामग्री बनाने वाली कंपनी को पेड़ काटने की अनुमति दी गई, तब स्थानीय ग्रामीणों ने इसका विरोध किया।

जब ठेकेदार पेड़ काटने पहुंचे, तो ग्रामीणों—विशेषकर महिलाओं—ने पेड़ों को गले लगाकर उन्हें कटने से बचाया। यह विरोध न तो हिंसात्मक था और न ही आक्रामक, बल्कि पूरी तरह शांतिपूर्ण और अहिंसक था। यही इसकी सबसे बड़ी ताकत बनी।

महिलाओं की निर्णायक भूमिका

चिपको आंदोलन की सबसे उल्लेखनीय विशेषता थी, महिलाओं की सक्रिय भागीदारी। पहाड़ी क्षेत्रों में महिलाएँ ही जल, ईंधन और चारे के लिए जंगलों पर निर्भर थीं। इसलिए वे भली-भांति समझती थीं कि वनों के विनाश का सीधा असर उनके जीवन पर पड़ेगा। गौरा देवी के नेतृत्व में महिलाओं ने अद्भुत साहस का परिचय दिया। जब पुरुष गांव से बाहर थे, तब उन्होंने स्वयं आगे आकर पेड़ों की रक्षा की। उनका यह कदम न केवल पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण था, बल्कि महिला सशक्तिकरण का भी प्रतीक बना।

नेतृत्व और विचारधारा

इस आंदोलन को दिशा देने में कई प्रमुख पर्यावरणविदों की भूमिका रही।

- सुंदरलाल बहुगुणा ने इस आंदोलन को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। उन्होंने “Ecology is Permanent Economy” का संदेश दिया और लोगों को समझाया कि प्रकृति का संरक्षण ही स्थायी विकास का आधार है।
- चंडी प्रसाद भट्ट ने स्थानीय समुदायों को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने स्वावलंबन और सामुदायिक भागीदारी पर जोर दिया।

संघर्ष और सफलता

चिपको आंदोलन ने धीरे-धीरे एक व्यापक जनांदोलन का रूप ले लिया। विभिन्न गांवों में लोग पेड़ों की कटाई के खिलाफ एकजुट होने लगे। इस आंदोलन के दबाव में सरकार को कई महत्वपूर्ण निर्णय लेने पड़े। 1980 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने हिमालयी क्षेत्रों में हरित वृक्षों की कटाई पर 15 वर्षों का प्रतिबंध लगा दिया। यह आंदोलन न केवल स्थानीय स्तर पर सफल रहा, बल्कि इसने पूरे देश में पर्यावरण संरक्षण की चेतना को मजबूत किया।

वैश्विक प्रभाव और प्रेरणा

चिपको आंदोलन ने विश्व स्तर पर भी ध्यान आकर्षित किया। इसे पर्यावरण संरक्षण के एक सफल मॉडल के रूप में देखा गया। इससे प्रेरित होकर अन्य देशों में भी कई आंदोलन शुरू हुए, जैसे, केन्या में "ग्रीन बेल्ट मूवमेंट"। यह आंदोलन यह दर्शाता है कि यदि स्थानीय समुदाय संगठित हो जाएँ, तो वे बड़े से बड़े संकट का सामना कर सकते हैं।

वैज्ञानिक और पारिस्थितिक दृष्टिकोण

वैज्ञानिक दृष्टि से चिपको आंदोलन अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसने यह सिद्ध किया कि—

- वन जल चक्र को नियंत्रित करते हैं,
- मिट्टी के कटाव को रोकते हैं,
- जलवायु को संतुलित रखते हैं,
- जैव विविधता के संरक्षण में सहायक होते हैं।

वनों की कटाई से न केवल पर्यावरणीय असंतुलन होता है, बल्कि यह मानव जीवन को भी सीधे प्रभावित करता है।

यह आंदोलन आधुनिक "सतत विकास" (Sustainable Development) की अवधारणा का एक प्रारंभिक उदाहरण है, जिसमें विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाए रखने पर जोर दिया जाता है।

सामाजिक और आर्थिक प्रभाव

चिपको आंदोलन ने यह भी स्पष्ट किया कि पर्यावरण संरक्षण केवल एक वैज्ञानिक मुद्दा नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक मुद्दा भी है। इस आंदोलन ने स्थानीय लोगों को अपने अधिकारों के प्रति

जागरूक किया। उन्होंने समझा कि प्राकृतिक संसाधनों पर उनका भी अधिकार है और उन्हें इनके संरक्षण में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिली और लोगों में आत्मनिर्भरता की भावना विकसित हुई।

वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता

आज, जब दुनिया जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरणीय संकटों का सामना कर रही है, चिपको आंदोलन का संदेश अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

भारत सहित पूरे विश्व में वनों की कटाई, प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन एक गंभीर समस्या बन चुका है।

ऐसे समय में यह आंदोलन हमें सिखाता है कि—

- प्रकृति का संरक्षण हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए,
- स्थानीय समुदायों की भागीदारी आवश्यक है,
- विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाना जरूरी है।

निष्कर्ष :

चिपको आंदोलन केवल एक आंदोलन नहीं, बल्कि एक विचारधारा है—प्रकृति के प्रति सम्मान और संरक्षण की भावना। यह हमें सिखाता है कि छोटे-छोटे प्रयास भी बड़े बदलाव ला सकते हैं। आज आवश्यकता है कि हम इस आंदोलन से प्रेरणा लेकर अपने दैनिक जीवन में पर्यावरण संरक्षण को अपनाएँ। वृक्षारोपण, जल संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग ही हमारे भविष्य को सुरक्षित बना सकता है। चिपको आंदोलन की यह विरासत आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बनी रहेगी यह संदेश देते हुए कि “जब इंसान प्रकृति के साथ खड़ा होता है, तब ही सच्चा विकास संभव होता है।”

डॉ. रंजना वर्मा
सहायक प्राध्यापक
प्राणीशास्त्र विभाग

कबीर के दोहे

1) दुख में सुमरिन सब करे, सुख मे करे न कोय ।
जो सुख मे सुमरिन करे, दुख काहे को होय ॥

2) माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर ।
कर का मन का डार दें, मन का मनका फेर ॥

3) गुरु गोविन्द दोनों खड़े, काके लागूं पाँय ।
बलिहारी गुरु आपनो, गोविंद दियो बताय ॥

4) बलिहारी गुरु आपनो, घड़ी-घड़ी सौ सौ बार ।
मानुष से देवत किया करत न लागी बार ॥

5) कबिरा माला मनहि की, और संसारी भीख ।
माला फेरे हरि मिले, गले रहट के देख ॥

6) सुख मे सुमिरन ना किया, दु:ख में किया याद ।
कह कबीर ता दास की, कौन सुने फरियाद ॥

7) साईं इतना दीजिये, जा मे कुटुम समाय ।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु ना भूखा जाय ॥

8) लूट सके तो लूट ले, राम नाम की लूट ।
पाछे फिरे पछताओगे, प्राण जाहिं जब छूट ॥

9) जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान ।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान ॥

10) जहाँ दया तहाँ धर्म है, जहाँ लोभ तहाँ पाप ।
जहाँ क्रोध तहाँ पाप है, जहाँ क्षमा तहाँ आप ॥

संकलन:- दर्शना परमार
कक्षा:- बी.ए. प्रथम वर्ष

<u>महिला सशक्तिकरण</u>

वो शक्ति है

कभी-कभी वह शक्ति है

कभी-कभी वह भक्ति है

न झुकती है ,ना रूकती है, ना थकती है, ना थमती है

वह शक्ति है ,कि जिसको अपनी शक्तियों का ज्ञान है

है ,जिसके हाथ में कमान

लक्ष्य पर ही है ,ध्यान

जो चक्रवात की लहर के

सर पर चढ़ के झूम ले

जो प्रश्न चिन्ह तोड़ के उत्तरों को चुम ले

आग और बर्फ दोनों साथ लेकर चलती है

जो तीर में बदलती है

जो ढाल में भी ढलती है

जो एक पल में अग्नि है और एक पल में नीर है

जब पत्थरों की स्याही से खीचंती लकीर हैं

जो चंद्रयान के सफर में हौसलों को भर्ती है

वो आ गई जो जिंद पे तो ,नदी का रुख भी मोड़ेगी

जो ले लिया है, एक बार प्रण वह करके छोड़ेंगी

वह शक्ति है

नामः- स्नेहा शुक्ला

कक्षाः- बी.एस.सी. सैन्य विज्ञान

मेरा पहला मोबाइल

था बचपन का सपना, जैसे कोई जादू,
पलकों में बसा था, वो सपनों का बादल।

उठाया जब पहली बार, दिल में थी धड़कन,
हर धुन पे झूमता था, जैसे कोई पागल ।

मेरा पहला मोबाइल, दोस्ती का नाता, हर
बात का साथी, हर पल का सहारा।

कभी मैसेज, कभी कॉल, कभी गेम्स का
मजा, हर छोटी खुशी में, वो था साथ
हमारा।

न जाने कितनी रातें, बातें और कहानियाँ,
उसके संग बिताया, वो सुनहरा था
जमाना।

फोटोज खींचे हमने, संग-संग मुस्कुराया,
यादों का गवाह था, वो पहली बार पाया।

वो दिन, वो क्षण, वो अनमोल पल, आज
भी है ताजा, जैसे कल ही का पल।

मेरा पहला मोबाइल, अब भी याद आता है,
दिल में वो बचपन, फिर से जाग जाता है।

निधि चौधरी
बी०ए० फर्स्ट ईयर

ऑनलाइन कक्षाएं

पहली बार जब मैंने मोबाइल को उठाया, दुनिया से जुड़ने का, एक नया रास्ता पाया

स्कूल की घंटी बनी सन्नाटा, ऑनलाइन कक्षा में मैंने नई रोशनी का एहसास पाया

स्क्रीन पर टीचर, जैसे दोस्त की कहानी, हर सबक, हर पाठ, बना अनोखी दास्तान

कभी वीडियो कॉल, कभी चैट बॉक्स की बातें, हर दिन सीखने को अलग था अफसाना

क्लास का समय, समय का अनुशासन, नए तरीके, नए माध्यम, सीखने का नया आयाम

जूम पर हंसी ठिठोली, गूगल मीट का संवाद, ऑनलाइन क्लासेस में भी वही दोस्ती का भाव

बटन की क्लिक से, नॉलेज की उड़ान, घर बैठे सीखना, बना एक नया जहान

कभी नेटवर्क की समस्या, कभी माइक्रोफोन की शिकायत, इन सब के बावजूद ज्ञान के अमिट होती रही बरसात

ऑनलाइन कक्षाएं, बनी शिक्षा की नई परिभाषा, छात्रों के जीवन में, एक नई आशा

घर का आराम सीखने का होश, ऑनलाइन कक्षाओं में सबको दिया एक नया जोश |

विश्वजीत सिंह

एम०ए० फर्स्ट सेम हिंदी

शूरवीर तू

भीरू नहीं शूरवीर तू
मुश्किलों को दे चीर तू।
मुट्ठी को फिर भींच ले,
रणभूमि को लहू से अपने सींच ले।
बुझा दे अपने सीने की धधकती
ज्वाला,
चाहे कितना पीना पड़े विष प्याला।
अंधकार हो रात्रि सा,
संकट रहे प्रचंड,
खड्ग तेरा दीप्त रहे,
विघ्न हो सब खंड।
अपने अंतर्द्वंद्व का ह्रास कर,
पराक्रमी लड़ाका तू
शत्रुओं का नाश कर।
कर दिखाने को हो जब विश्व पटल,
माथे पर तेज रहे हृदय में विश्वास अटल
राह देना खुद को,
जब यौवन का उन्माद हो,
साध लेना हिय को अपने,
ताकि अनहद नाद हो।
सर्वजीत मानव है,
अभिमान कर, कायर नहीं,
शूरवीर तू सम्मान कर ||

श्री कमल राज सिंह राजोरिया
इलेक्ट्रॉनिक विभाग

<u>मानव की कैद में धरती</u>

सब ओर सन्नाटा है छाया,
न खिलते फूल न चहचहाती चिडिया
न नदियों की कल-कल न मंदिर की घंटियों
न ठंडी हवा के झोंके, न तारों भरी रातें,
न नीला समंदर, न बर्फ भरी पहाडियाँ मानो कैद में है धरती....
लूट खसोट, छीन झपट,
लड-झगड़, गाली-गलौज
शोर-शराबा गुत्थम-गुत्था
अफरा तफरी, खून-खराबा
मानो कैद में है मानवता
हे मानव अब तो जाग !
धरती माँ की पुकार सुन !
मानवता की गुहार सुन !
धरती माँ कह रही कराह कर !
अब भी न संभला तू तो
खत्म हो जाएगा तू, तेरी जमात...
अब भी समय है जाग
फिर छेड़ नया राग
धरती माँ है, तुझे माफ कर देगी
अब तेरी बारी है माँ को सँभालने की
मानवीय मूल्यों को संवारने की
चिड़ियों को एक बार फिर नया घोंसला बनाने दो,
धरती की गोद में मनु की पीढ़ियों को सोने दो....

डॉ मनीषा दंडवते
सहा. प्राध्यापक वनस्पति शास्त्र

नारी शक्ति

नारी हूं ,मैं
गौरव हूं, मैं
जगमग जहां का
हिस्सा हूं ,मैं
बंधनो का बंधन हूं, मैं
मर्यादाओं की डोर हूं ,मैं
हंसते-हंसाते निभती जाती
बुनती जाती, संवरती जाती
एक धागे में सबको पिरोए जाती
नारी हूं ,मैं
गौरव हूं ,मैं
कर्मपथ पर बढ़ती जाती
नयी पहचान गढ़ती जाती
सरल सहस में मानी जाती
सबके मन में जगह बनाती जाती
नारी हूं ,मैं
गौरव हूं, मैं
नहीं किसी से डरने वाली
नहीं किसी से रुकने वाली
धारा बन बहने वाली
संघर्ष कर भाग्य बदलने वाली
हूं ,कुदरत के अनमोल मैं ,प्यारी
नारी हूं, मैं
गौरव हूं ,मैं
जगमग जहां का
हिस्सा हूं ,मैं

डॉ.ममता वर्मा
अतिथि विद्वान
हिंदी विभाग

<u>पर्यावरण बचाये</u>

जल ,जंगल और जमीन की रक्षा, करना है हमको
पर्यावरण बचाएंगे ये शपथ लेना है ,हम सबको
हवा चाहिए शुद्ध सभी को
जीवन का आधार यही है
जिन पेड़ों से मिलती है यह(हवा)
चलो बचाएं हम सब उनको
पर्यावरण बचाएंगे ,यह शपथ लेना है ,हम सबको
या संदेश फैलाएं ,घर-घर
पेड़ लगाए वन वन ,उपवन
शुद्ध जल ,सुस्वच्छ पवन से
आओ महाकाएं जीवन को ,
पर्यावरण बचाएंगे यह शपथ लेना है, हम सबको
अनजाने रोगों से लड़ने
हम सब रहे सदा तैयार
न होने दे हवा जहरीली
ना कमजोर करे तन मन को ,
पर्यावरण बचाएंगे यह शपथ लेना है, हम सबको
समय आ गया है कि मिलकर
पेड़ ,पशु, जल, धरा बचाएं
तापमान जो बहुत बड़ा है
हम उसको सीमित कर पाए ,
जागरूकता सहजता से ,बदले अपनी सोच को ,
पर्यावरण बचाएंगे यह शपथ लेना है, हम सबको
सागर। नदी ,पवन ,धरती की
रक्षा करना है ,हमको
हम बदलेंगे ,जग बदलेगा
यह मार्ग दिखाना है, हम सबको
पर्यावरण बचाएंगे यह शपथ लेना है ,हम सबको

डॉ. रेखा नागर
सहा प्राध्यापक (हिंदी विभाग)

Redefining Empowerment: with special Reference to Dr. Sudha Murty

The word empowerment, at the very onset suggests the concept of power. Broadly speaking it is a process of gaining freedom and the power to do what an individual wishes to do or to Psychological control what happens to you. The empowerment of an individual is now an essential part of the philosophy of the world. The way a women is treated, speaks a lot about that society and country. With special context to our nation, India, it has been observed that despite being educated, there is a need to change the mindset. The empowerment of women is the need of the hour. It can be broadly categorized into five main parts:

1] Social

2] Educational

3] Economic

4] Political

5] Psychological

Dr. Sudha Murthy, a multifaceted talent person is the chairperson of Infosys Foundation. She has a master's degree in electrical engineering and has taught computer science at Bangalore University colleges. She is a columnist for English and Kannada dailies, with twenty-nine books and 200 titles to her credit.

Dr. Murthy is herself a living example of woman empowerment. She opted for engineering in the year 1968, when it was an all-male domain. Among 150 students she was the only female candidate. She is a philanthropist and her main concerns are sectors of healthcare, education and the upliftment of poor and downtrodden.

The author started contributing towards social work and her very first project was a very challenging one. This dealt with the empowerment of 3000 ladies who were trapped in the malpractice of "devadasi". The word devadasi literally means servant of the lord. In earlier times, the devadasis were basically musicians and dancers. They practiced their art in temples to please the Gods. With the passage of time the word devadasi became synonymous with "sex workers". The chapter "Three Thousand Stitches" is an emotional statement about how these

women were empowered to live respectfully and independently by means of education and awareness.

A thorough study of the fiction, non- fiction, travelogues and a systematic review of research literature. A critical analysis of the concerned novels Mahashweta, House of Cards, Gently Fall the Bakula , Three Thousand Stitches and DollarBahu. Research journals reviewed. It throws light on the character of these women, who despite non-cooperation pave their way to success.These novels reveal more than one aspect of life. They are a mirror image of their creator. She was the only lady among so many male students who pursued engineering course. She had to wear a saree, sit in a separate room, listen to the comments from boys, yet she did not deter from her mission.The author Sudha Murty has indeed succeeded in propagating the concept of women empowerment. She herself is an empowered personality with a mission to bring about upliftment of women. The rehabilitation of 3000 devadasis is no less than Herculean task. Even her protagonist are not just confirm to restrictions of family. In their own way they are empowered by education, a keen perception and a motive to march towards a glorious future for themselves as well as the nation. She echoes the spirit of the poet Sandra Kring, “Be like a single blade of grass . . . yet still she stands upright with dignity, knowing that she endures and still she dances with the wind.” (“Sandra Kring>quotes”)

Dr. Sunita Wahal

Assistant Professor

English Department

How Failure Shaped Success

Many people think success means never failing. But in real life, failure is often the first step toward success. Mistakes, losses, and rejection can feel painful, but they teach powerful lessons. Failure shapes success by building strength, wisdom, and determination.First, failure teaches us what does not work. When something goes wrong, we learn how to improve. For example, Thomas Edison failed thousands of times before inventing the electric light bulb. Instead of giving up, he said he found many ways that did not work. Each failure brought him closer to success. His story shows that mistakes are part of learning.

Second, failure builds resilience. When we face difficulties, we grow stronger. Life is not always easy, and success does not happen overnight. Michael Jordan was once cut from his high school basketball team. He felt disappointed, but he did not quit. He practiced harder and became one of the greatest basketball players in history. His failure pushed him to improve. Failure also teaches humility. When we fail, we understand that we are not perfect. This makes us more open to advice and new ideas. It helps us become better leaders and better people. Successful individuals often say their biggest lessons came from their lowest moments.

In addition, failure helps us discover our true strengths. Sometimes when one path closes, another opens. For instance, J.K. Rowling faced many rejections before her book "Harry Potter" was published. She struggled financially and felt hopeless at times. However, she continued writing. Today, She is one of the most successful authors in the world. Her early failures did not stop her dreams. Most importantly, failure changes our mindset. Instead of seeing it as the end, we begin to see it as a new beginning. People who succeed understand that failure is temporary. They use it as motivation instead of fear.

In conclusion, failure is not the opposite of success. It is part of the journey. It teaches lessons, builds strength, and helps people grow. Without failure,success would not be as meaningful. When we learn to accept and learn from failure, we move one step closer to achieving our goals.

Name:- Lakshya Yadav

Youth Perspectives on Environmental Challenges

Environmental issues have been discussed globally for decades, but today's generation confronts them with a heightened sense of urgency due to direct exposure to climate change, pollution, and biodiversity loss. Unlike earlier generations who may have perceived these concerns as distant or theoretical, young people now witness rising sea levels, extreme weather events, and natural disasters firsthand. These lived experiences have strengthened their awareness and motivated them to take active roles in environmental protection. A key characteristic of this generation's perspective is its recognition of the interconnected nature of environmental problems. Young people understand that climate change is not solely an ecological issue but a complex crisis intertwined with social inequality, economic instability, public health, and political systems. This broader understanding has shaped a more integrated form of activism, linking environmental protection with social justice, economic reform, and political accountability. For many young activists, meaningful climate action requires systemic change rather than isolated solutions.

Digital technology and social media play a central role in shaping youth environmental engagement. With widespread access to online platforms, information is more accessible, and marginalized voices can reach global audiences. Social media channels have become powerful tools for raising awareness, organizing protests, and building international movements. Online activism often translates into real-world action, enabling young people to coordinate campaigns and influence public discourse on a large scale. Education further strengthens environmental awareness among the youth. Schools increasingly incorporate climate science and sustainability into their curricula, equipping students with knowledge about environmental challenges and potential solutions. Beyond classroom instruction, extracurricular activities such as eco-clubs and sustainability projects provide practical experience. These initiatives cultivate leadership skills, responsibility, and a sense of empowerment, preparing young individuals to become informed advocates and innovative problem-solvers.

Youth consumer behavior also reflects growing environmental consciousness. Many young people prioritize eco-friendly, ethically sourced, and socially responsible products. Practices such as thrift shopping, reducing single-use plastics, and adopting plant-based diets indicate a shift toward sustainable lifestyles. By supporting environmentally responsible brands and rejecting harmful practices, young consumers influence corporate behavior and encourage greener production methods. Political engagement is another significant dimension of youth environmental activism. Young people increasingly participate in grassroots movements, community initiatives, and formal political processes. They demand ambitious climate policies, transparency, and accountability from leaders. Youth-led movements have shaped public debates and influenced policies at local, national, and global levels. This involvement highlights their belief that addressing environmental crises requires structural reform and long-term policy change.

Despite their dedication, young people face notable challenges. The scale of the environmental crisis can cause anxiety and feelings of helplessness, often described as eco-anxiety. Additionally, resistance from political institutions and corporations, along with slow policy implementation, can be discouraging. Nevertheless, the resilience and determination of this generation remain strong, as they continue to innovate, collaborate, and advocate for change. Intergenerational cooperation is essential for effective environmental action. While differences in priorities may create tension between age groups, constructive dialogue can bridge gaps and produce inclusive solutions. Young people contribute energy, creativity, and urgency, while older generations offer experience and established networks. Together, they can achieve sustainable progress. Cultural narratives and technological innovation further support environmental efforts. Media, literature, and art raise awareness and inspire action, while advancements in renewable energy, sustainable agriculture, and waste management provide practical tools for change. Overall, today's generation combines awareness, activism, innovation, and collaboration, offering hope for a more sustainable and equitable future.

Prof. Deepika Bhardwaj
Guest Faculty Department of English

Women and Computers: Empowering the Digital Generation

Introduction :

In the modern digital age, computers have become an essential part of human life. From education and communication to business and creativity, technology connects the world in ways never imagined before. Women today are actively participating in this technological revolution and proving that innovation has no gender.

Earlier, women had limited opportunities in technical fields, but with growing awareness and access to education, they are now becoming programmers, designers, researchers, and entrepreneurs. The connection between women and computers is not just about using technology — it is about shaping the future through knowledge and creativity. "Technology becomes powerful when everyone gets an equal chance to create and innovate."

Role of Computers in Women's Education :

Computers have made education more accessible and flexible for women. Online classes, digital resources, and virtual learning platforms allow students to learn anytime and anywhere. Computer education helps women develop logical thinking, creativity, and problem-solving skills, which are important for academic and professional success. "Education supported by technology opens doors that once seemed closed." Career Opportunities in the Computer Field. The computer industry offers many career options for women, including:

Software Development

Web Designing

Data Analysis

Graphic Designing

Cyber security

Digital Marketing

These careers provide financial independence and global opportunities. Many women also work remotely, balancing personal and professional responsibilities effectively.

Technology as a Tool for Empowerment :

Computers have empowered women socially and economically. Through digital platforms, women can start online businesses, share ideas, and connect with people worldwide. Technology helps women express their voices, learn new skills, and become self-reliant. "When women learn technology, they don't just change their lives — they change society."

Challenges and the Way Forward :

Despite progress, women still face challenges such as stereotypes and limited representation in technical leadership roles. Encouraging digital literacy, providing equal opportunities, and promoting computer education in colleges can help overcome these barriers. Educational institutions play an important role by organizing workshops, coding events, and mentorship programs that motivate female students to explore technology careers.

Conclusion :

Women and computers together represent growth, innovation, and empowerment. As more women enter the digital world, technology becomes more inclusive and creative. Supporting women in computer education and careers will help build a stronger and more balanced future.

"The future of technology is brighter when women are part of its creation."

HARSHITA CHAUHAN
BCA FIRST YEAR

रोजगार प्रकोष्ठ- झलकियाँ

राष्ट्र प्रथम की भावना से अध्ययन करें: ब्रिगेडियर भनोट

कैडेट्स के लिए कैरियर काउंसलिंग एवं रोजगार की संभावना पर व्याख्यान

● महू/ राज न्यूज नेटवर्क

भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोमवार को एनसीसी ग्रुप इंदौर के पूर्व ग्रुप कमांडर ब्रिगेडियर आकाशदीप भनोट, सेना मेडल ने महाविद्यालय के एनसीसी कैडेट्स से आव्हान किया कि कैडेट्स राष्ट्र प्रथम की भावना के साथ अध्ययन करें।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रवीण ओझा एवं जनभागीदारी समिति अध्यक्ष निलेश पाटीदार ने बताया कि स्वामी विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ के तत्वावधान में महाविद्यालय में कैडेट्स के लिए कैरियर काउंसलिंग एवं रोजगार की संभावना विषय पर आज ब्रिगेडियर आकाशदीप भनोट, (सेना मेडल) की पत्नि श्रीमती टीना भनोट ने कैडेट्स को विस्तार से जानकारी दी।

रोजगार की जानकारी दी

श्रीमती टीना भनोट ने कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के कैडेट्स को उनके विषय चयन तथा अध्यापन के आधार पर रोजगार की संभावना के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर ब्रिगेडियर भनोट ने कैडेट्स को समय प्रबंधन तथा अनुशासन के साथ अपना प्रत्येक कार्य करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कैडेट्स से आग्रह किया कि वे अपना अध्यापन राष्ट्र प्रथम की भावना के साथ पूर्ण करें, ताकि हमारा देश विकसित भारत की संकल्पना को पूर्ण कर सके। कार्यक्रम के प्रारंभ में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ प्रवीण ओझा ने ब्रिगेडियर आकाशदीप भनोट एवं टीना भनोट का स्वागत किया। कार्यक्रम में मेजर डॉ कृष्णा भूरिया, डॉ जगदीश कन्नौजे, डॉ मुकेश बडोले, डॉ. एच एस मंडलोई, डॉ. यशवंत निगवाल तथा विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में ब्रिगेडियर आकाशदीप भनोट को प्राचार्य डॉ ओझा द्वारा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन स्वामी विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ के प्रभारी डॉ. शैलेंद्र पिपरिया ने किया तथा आभार मेजर डॉ संजय सोहनी द्वारा व्यक्त कि

राष्ट्रीय कैडेट कोर - झलकियाँ

आल इंडिया पर्वतारोहण कैम्प हेतु कैडेट प्रणव ठाकुर ग्वालियर रवाना

भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय महू की 9 एम पी बटालियन एनसीसी इंदौर के कैडेट प्रणव ठाकुर का चयन आल इंडिया पर्वतारोहण कैम्प ग्वालियर हेतु किया गया है। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ प्रवीण ओझा एवं 9एम पी बटालियन एनसीसी इंदौर के कमान अधिकारी कर्नल मोहन तिवारी ने बताया कि बटालियन से सिर्फ दो कैडेट्स का चयन ग्वालियर में आयोजित आल इंडिया पर्वतारोहण कैम्प ग्वालियर हेतु किया गया है.जिसमें भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय महू के कैडेट प्रणव ठाकुर तथा शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सेंधवा के कैडेट राजेश तिरोले 10 नवंबर से 21नवंबर 2025 तक इंदौर ग्रुप का प्रतिनिधित्व करेंगे।इस कैम्प में सम्पूर्ण भारत के 9 निदेशालयों के कैडेट्स भाग लेंगे। आल इंडिया पर्वतारोहण कैम्प ग्वालियर ग्रुप की 15 वीं बटालियन एनसीसी ग्वालियर द्वारा आयोजित किया जा रहा है.इस कैम्प में कैडेट्स साहसिक गतिविधियों के अंतर्गत कैडेट्स को पर्वतारोहण का बेसिक प्रशिक्षण दिया जायेगा। महाविद्यालय के एनसीसी अधिकारी मेजर डॉ संजय सोहनी ने बताया कि कैडेट प्रणव ठाकुर के इस प्रतिष्ठित कैम्प में चयन पर महाविद्यालय जनभागीदारी समिति अध्यक्ष एडवोकेट निलेश पाटीदार, प्राचार्य डॉ.प्रवीण ओझा एवं 9एम पी बटालियन एनसीसी इंदौर के कमान अधिकारी कर्नल मोहन तिवारी,प्रशासनिक अधिकारी कर्नल वरुण भारतीय,मेजर डॉ कृष्णा भूरिया तथा सूबेदार मेजर बृजेश कुमार तथा महाविद्यालय स्टॉफ ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी है।

गणतंत्र दिवस परेड दिल्ली के लिए महू की भावना का चयन

महू (इंदौर समाचार)। मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ एनसीसी निदेशालय की ओर से भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय महू की 9 एम पी बटालियन एनसीसी इंदौर की सीनियर अंडर ऑफिसर भावना कुशवाह का गणतंत्र दिवस परेड में कर्तव्य पथ परेड हेतु किया गया है। 9 एमपी बटालियन एनसीसी इंदौर के कमान अधिकारी कर्नल मोहन तिवारी एवं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ प्रवीण ओझा ने बताया कि गणतंत्र दिवस परेड नई दिल्ली में सीनियर अंडर ऑफिसर भावना कुशवाह का कर्तव्य पथ पर चयन होना अत्यंत गौरव की बात है।उन्होंने बताया कि÷भावना÷ कर्तव्य पथ परेड पर गणतंत्र दिवस परेड की रोजाना प्रैक्टिस हेतु जा रही हैं यह प्रैक्टिस प्रातः4 बजे से 11-00 बजे सुबह तक की जा रही है। मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ एनसीसी निदेशालय की ओर से सीनियर अंडर ऑफिसर भावना के गणतंत्र दिवस परेड में चयन पर कमान अधिकारी कर्नल मोहन तिवारी, महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ प्रवीण ओझा,बटालियन के प्रशासनिक अधिकारी कर्नल वरुण भारतीय, महाविद्यालय जनभागीदारी समिति अध्यक्ष एडवोकेट निलेश पाटीदार, एन सी सी अधिकारी मेजर डॉ संजय सोहनी, मेजर डॉ कृष्णा भूरिया,सूबेदार मेजर बृजेश कुमार तथा महाविद्यालय के सभी स्टॉफ सदस्यों ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी है।

राष्ट्रीय सेवा योजना - झलकियाँ

जानापाव में राष्ट्रीय सेवा योजना के एक दिवसीय शिविर का आयोजन

महू(इंदौर समाचार) भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय महू में राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा दिनांक 05 दिसम्बर 2025 को एक दिवसीय शिविर का आयोजन जानपाव में किया गया । कार्यक्रम अधिकारी डॉ. शिल्पी वर्मा एवं श्रीमती संगीता गुप्ता के साथ सभी छात्राएँ जानापाव पहुँची । एक दिवसीय शिविर के अंतर्गत छात्राओं द्वारा विभिन्न गतिविधियाँ की गई । जिसमें सर्वप्रथम परिसर की साफ़ सफ़ाई की गई । तत्पश्चात डिजिटल क्राइम पर एक नुक्कड़ नाटक का प्रदर्शन छात्राओं द्वारा किया गया । इसके बाद अशोक भवन परिसर के पास स्थित उद्यान में सभी छात्राओं ने प्राध्यापकों के साथ मिलकर वृक्षारोपण किया । जिसमे आम, जाम, नींबू एवं पीपल आदि के कुल 12 पौधें लगाये गए । इस एक दिवसीय शिविर में कुल 32 महिला स्वयं सेवकों एवं 05 प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों ने सहभागिता की ।

एनएसएस महिला इकाई के सात दिवसीय शिविर का समापन

महू। भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) महिला इकाई द्वारा आयोजित सात दिवसीय विशेष शिविर का समापन समारोह हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

शिविर के पांचवें दिन मुख्य अतिथि के रूप में महू की लोकप्रिय विधायक सुश्री उषा ठाकुर उपस्थित रहीं। स्वयं सेवक अध्यक्ष हर्षिता चौहान एवं सचिव दिव्या विश्वकर्मा द्वारा उनका तिलक कर स्वागत किया गया। विधायक सुश्री उषा ठाकुर ने अपने संबोधन में राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयंसेविकाओं के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि समाज सेवा में बालिकाओं की सक्रिय भूमिका अत्यंत प्रेरणादायी है। उन्होंने सभी से एनएसएस से निरंतर जुड़े रहने एवं समाज सेवा को आगे बढ़ाने का आह्वान किया। इसके पश्चात् विधायक सुश्री उषा ठाकुर एवं प्राचार्य डॉ.प्रवीण ओझा एवं भेरूलाल पाटीदार मंडल के पूर्व मंडल अध्यक्ष राय बहादुर सिंह तंवर द्वारा सभी स्वयंसेविकाओं को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किए गए। रासेयो समन्वयक डॉ. प्रकाश गढ़वाल ने भी सभी को शुभकामनाएं दीं।

शिविर के छठे दिन मुख्य अतिथि के रूप में सरपंच श्री जितेंद्र डावर एवं उपसरपंच श्री महेश ठाकुर उपस्थित रहे। शिविर के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने वाली स्वयंसेविकाओं को मेडल देकर सम्मानित किया गया। समापन गीत "हम होंगे कामयाब" के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। रात्रि में कैम्प फायर का आयोजन भी किया गया।

शिविर के सफल आयोजन में श्रीमती संगीता गुप्ता एवं ईश्वर मकवाना का विशेष योगदान रहा। इस अवसर पर जनभागीदारी समिति अध्यक्ष एडवोकेट निलेश पाटीदार एवं प्राचार्य डॉ. प्रवी[illegible] ओझा ने सभी को शुभकामनाएं [illegible]

क्रीड़ा गतिविधियाँ - झलकियाँ

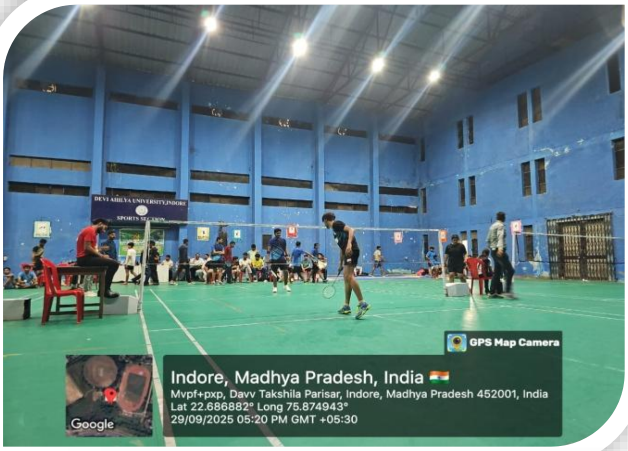

स्नेह सम्मेलन - झलकियाँ

स्नेह सम्मेलन – झलकियाँ
Campus click Competition

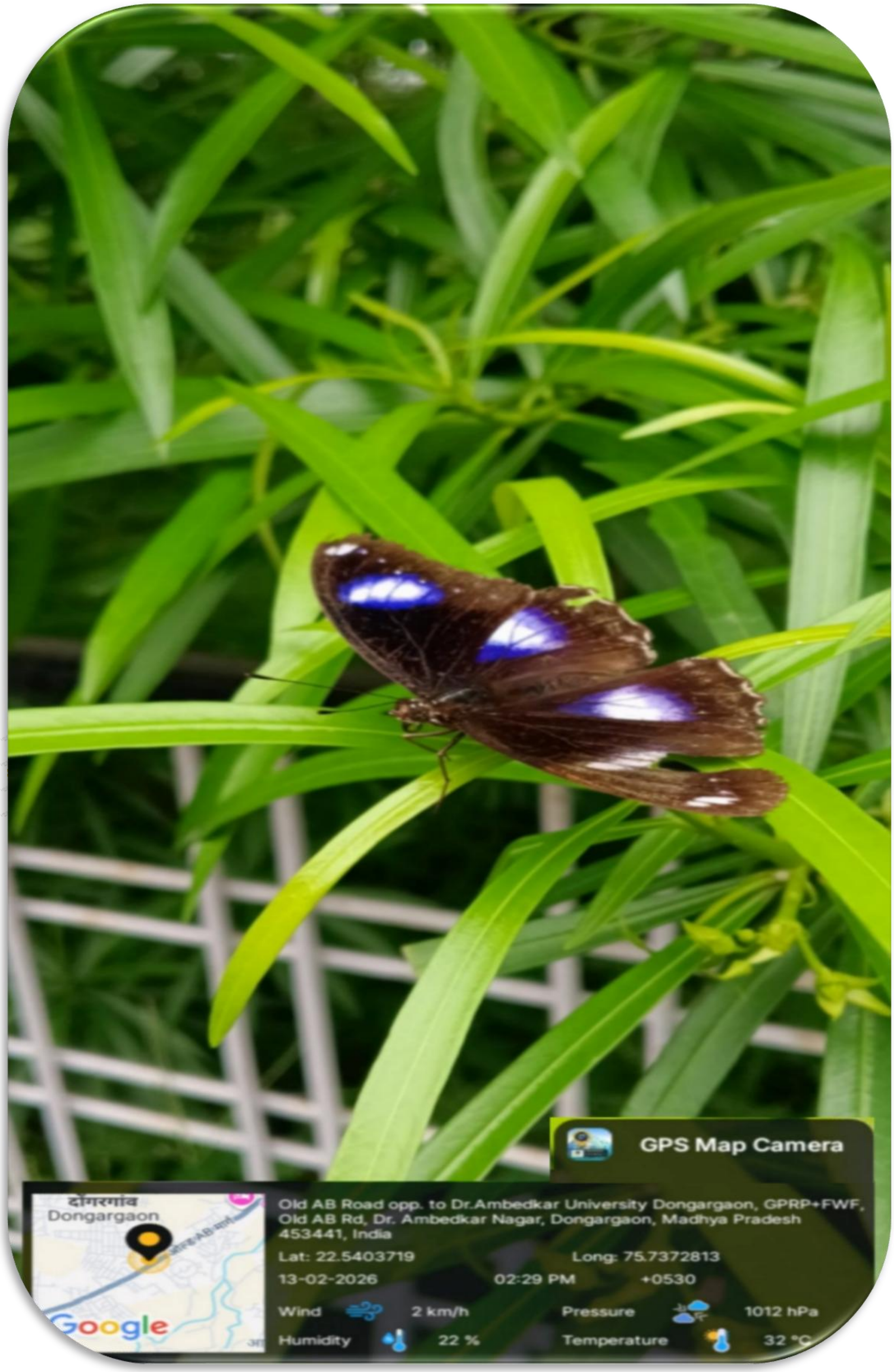

स्नेह सम्मेलन – झलकियाँ
Campus click Competition

स्नेह सम्मेलन – झलकियाँ
Campus click Competition

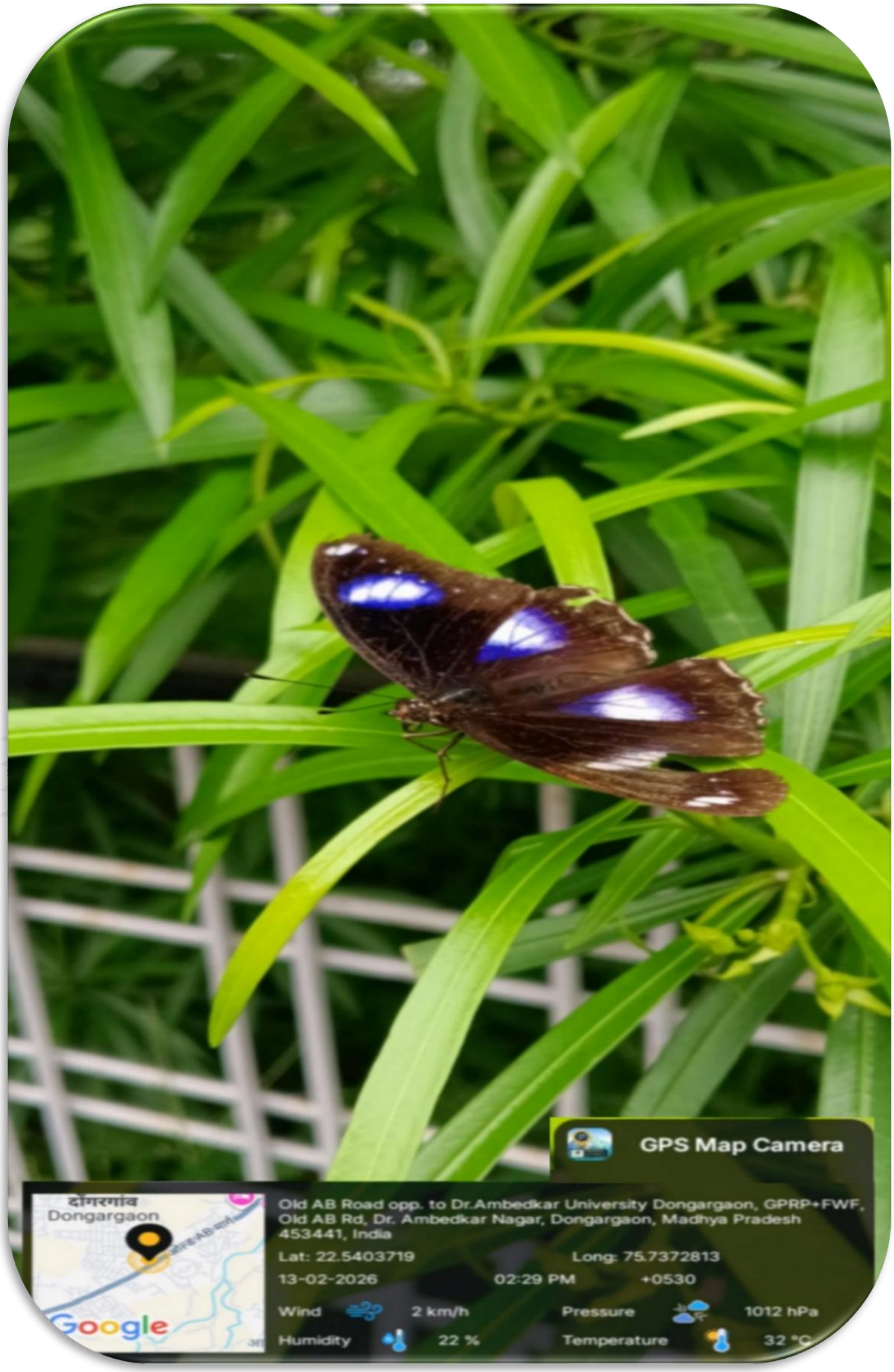

स्नेह सम्मेलन – झलकियाँ
Campus click Competition

भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू

सम्पोषणार्थ पदम् इदम्।

Published by IQAC, BHERULAL PATIDAR GOVT. P.G. COLLEGE, MHOW